आर.एन.आई. नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अप्रैल 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 अप्रैल - 01 मई 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 02
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

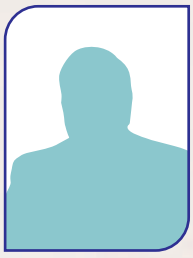

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब , टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव
MID No. 135417

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर
MID No. 153597

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बैंगलोर
MID No. 188833

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बैंगलोर/गंगाशहर
MID No. 116163

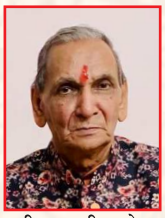
श्री पारसजी छाजेड़
धमधा
MID No. 140335

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर
MID No. 153432

स्व. श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर
MID No. 195591

श्री मनीष उत्तमजी कोठारी
बैंगलोर
MID No. 129180

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता
MID No. 103429

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद
MID No. 105316

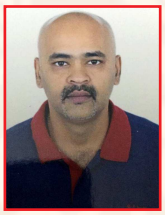
श्री राजेशजी कटारिया
बैंगलोर
MID No. 105316

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली
MID No. 194511

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक
MID No. 148228

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर
MID No. 109641

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम
MID No. 185412

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम
MID No. 185424

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली
MID No. 194611

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

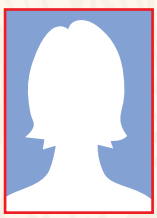
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत
MID No. ******

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

चतुर्थ चरण

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बैंगलोर
MID No. 129177

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री शान्तिलालजी बच्छावत–सूरत * श्री अनिलकुमारजी गोलछा–सिलचर * श्री प्रकाश चंदजी कोठारी–अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती–देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलालजी बोथरा–मुम्बई * श्री गोपालचंदजी खिवसरा–बैंगलूरु * स्व. श्री बापुलालजी कोठारी–उदयपुर * श्री विजयकुमारजी टंच–बदनावर * श्री दिलीपजी पगारिया–जावरा

द्वितीय चरण * श्री तेजकुमारजी तातेड़–इंदौर * श्री पूनमचंदजी भूरा–भीलवाड़ा * श्री बसंतीलालजी चंडालिया–चित्तौड़गढ़ * श्री कमलजी बैद–मुम्बई * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल–रायपुर * श्रीमती सुनीताजी मेहता–बेलगाँव * श्री राजकुमारजी बाफना–हरदा * श्री प्रेमचंदजी व्होरा– बदनावर

प्रथम चरण * श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया–सिलचर * श्री मनोजकुमारजी संचेती–बेलगाँव * श्री उदयराजजी पारख–रायपुर * श्री झंवरलालजी कुम्मट–सिलचर * श्री सोहनलालजी रांका–ब्यावर * श्रीमती ज्ञानकँवरजी ओस्तवाल–ब्यावर * श्री विजयकुमारजी मुणोत–हैदराबाद * श्री भीखमचंदजी ओस्तवाल–कलंगपुर * श्री अखराजजी ओस्तवाल–भिलाई * श्री मुन्नालालजी पँवार–कानवन * श्री चेतनकुमारजी हिंगड़–ब्यावर * श्री अभयकुमारजी भण्डारी–जावरा * श्री दिलीपजी ओस्तवाल–कलंगपुर * श्री कँवरलालजी देशलहरा–गुण्डरदेही * श्री प्रकाशचंदजी श्री श्रीमाल–हैदराबाद * श्री निर्मलजी खिंवसरा–ब्यावर * श्री निहालचंदजी कोठारी–ब्यावर * श्रीमती मनोरमादेवी बैद–रायपुर * श्री भागचन्दजी सिंघी–जोधपुर

दीक्षा प्रसंग

उदयपुर। आगमज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से **मुमुक्षु बहन सुश्री कुमकुमजी कोटड़िया, धमतरी** की भव्य जैन भागवती दीक्षा दिनांक **28 मई 2023** को संभावित है। अपूर्व शुभ कर्मोदय से दीक्षा ग्रहण करने का ऐसा सुअवसर प्राप्त होता है।

हम सभी ऐसे उच्च भावों का वरण करें, इसके लिए हमें दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त करना होगा। यदि हम दीक्षा ग्रहण नहीं कर सकते तो कम से कम दीक्षा जैसे शुभ कार्य में अन्तराय न देकर दीक्षा की अनुमोदना तो कर ही सकते हैं। उच्च भावों में रमण करने का यह सुअवसर हमें प्राप्त हो सकता है। आइए! दीक्षा साक्षी बन कर्मनिर्जरा के लाभ का यह अवसर न गवाएँ।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में दिए जाने वाले **'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार'** के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

1. पुरस्कार के लिए पात्रता एवं नियम

(1.1) यह पुरस्कार आचरण पर आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है वही व्यक्ति इस पुरस्कार हेतु नामांकित हो सकता है।

(1.2) इस पुरस्कार के लिए जो स्वयं को पात्र समझते हैं आवेदन कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा भी इस प्रकार के श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम प्रस्तावित किया जा सकता है।

(1.3) पुरस्कार के लिए जाति, धर्म एवं उम्र आदि का कोई बंधन नहीं रहेगा।

2. पुरस्कार का स्वरूप

(2.1) पुरस्कृत होने वाले समता मनीषी को दो लाख रूपये का चैक, अभिनंदन पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ठ दिवस अथवा किसी गरिमामय समारोह में सम्मान पूर्वक भेंट किया जाएगा।

3. आवृतिः- द्विवार्षिक

: निवेदक :
रिटायर्ड जस्टिस जे.के. रांका, जयपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता

केन्द्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर,बीकानेर (राज.)-334401
फोन 0151-2270261, 2270359, मो.नं. - 9116109777
ई-मेल :- ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम तिथि 30 मई 2023 है, प्रविष्टियाँ केन्द्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

आवृति द्विवार्षिक

समता विभूति, समीक्षणध्यान योगी आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने समाज व विश्व को समता दर्शन और व्यवहार की अनमोल विरासत प्रदान की। आचार्यश्री की पुण्यस्मृति में श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ द्वारा **'आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार'** हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही है।

1. पात्रता :-

(1.1) यह पुरस्कार शिक्षा, समाजसेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जनसेवा-क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्तिअथवा संस्था को प्रदान किया जाता है।

(1.2) जनसेवा पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति अथवा संस्था, जो भारत में उपरोक्त जनसेवा में कार्यरत हो, नामांकित किया जा सकता है।

2. आवेदन के नियम :-

(2.1) आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नं., ई-मेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख हो। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकॉर्ड अर्थात् समाचार-पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ्स, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र, स्मृतिचिह्न के फोटोग्राफ्स आदि भी अवश्य भिजवाएं।

(2.2) नामांकित व्यक्ति एवं संस्था की सेवा से लाभांवित होने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के लेटर-हैड पर अनुसंषा-पत्र भी संलग्न किये जा सकते हैं। चूँकि यह पुरस्कार सेवाकार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जा रहा है।

3. स्वरूप :-

(3.1) इस हेतु चयनित व्यक्ति/संस्था को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से दो लाख की राशि का चैक, अभिनंदन पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ठ दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जायेगा।

: निवेदक :
अजय पारख, रायपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम तिथि **30 मई 2023** है, प्रविष्टियाँ केन्द्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता

केन्द्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401
फोन 0151-2270261, 2270359, मो.नं. - 9116109777 ई-मेल :- ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति
उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार **Award of Excellence** के स्वरूप में भारत सरकार की उच्च प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत, जो जैन धर्मावलम्बी शीर्षस्थ पदाधिकारी के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर जैन समाज की गौरवान्वित करते हैं, वे इस पुरस्कार हेतु चयनित किए जाने के पात्र समझे जाते हैं।

2. पुरस्कार के नामांकन

(2.1) किसी भी उपयुक्त पदाधिकारी का, जो जैन मतावलम्बी हो, उपरोक्त पुरस्कार हेतु नामांकन प्रस्तुत किया जा सकता है।

(2.2) जिस व्यक्ति को नामांकित किया जा रहा है, कृपया उसका पूरा नाम, पता, प्रशासनिक पद, सम्पर्क विवरण, सेवा क्षेत्र, निष्पादन रिकॉर्ड आदि का विस्तृत उल्लेख नामांकन/संस्तुति में समाविष्ट करें।

3. पुरस्कार का स्वरूप

(3.1) चयनित पुरस्कार-विजेता को श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ की ओर से एक लाख रुपये का चैक, अभिनंदन पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ठ दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मान पूर्वक भेंट किया जाएगा।

4. आवृति : वार्षिक

निवेदक :

आई.ए.एस. उत्तमचंद नाहटा, दिल्ली

संयोजक

(सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार समिति)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम तिथि **30 मई 2023** है, प्रविष्टियाँ केन्द्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता

केन्द्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401 फोन 0151-2270261, 2270359,

मो.नं. - 9116109777 ई-मेल :- ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

1. पात्रता

इस पुरस्कार के अन्तर्गत जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला एवं संस्कृति और कथा, निबंध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर दिया जाता है।

2. पुरस्कार के नियम

(2.1) पुरस्कार हेतु प्रकाशित /अप्रकाशित, (पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(2.2) अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जावेगा।

(2.3) प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में (वर्ष 2016 से पूर्व नहीं) एवं घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिये। यानि पुरस्कार हेतु प्रस्तुत कृति का प्रकाशन वर्ष 2016 के पश्चात् का होना चाहिए।

(2.4) पुरस्कार मूल्यांकन के लिए कृति की मुद्रित अथवा पाण्डुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होगी। पाण्डुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जायेगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जावेगी।

(2.5) अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बंधी होनी चाहिये।

(2.6) प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण पत्र साथ भेजें।

3. स्वरूप

(3.1) पुरस्कार के अंतर्गत संघ की ओर से 51 हजार रुपये की राशि का चैक, अभिनंदन पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ठ दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मान पूर्वक भेंट किया जाएगा।

आवृति : वार्षिक

निवेदक : रिटायर्ड आई.ए.एस. प्रदीप बुरड़, जयपुर
संयोजक, स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता

केन्द्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401 फोन 0151-2270261, 2270359, मो.नं. - 9116109777 ई-मेल :- ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम तिथि 30 मई 2023 है, प्रविष्टियाँ केन्द्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

श्रमणोपासक सदस्यता

(केवल भारत में)
1,000/-
(15 वर्ष के लिए)

(विदेश हेतु)
15,000/-
(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय वार्षिक

(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

बैंक खाता विवरण

Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

Bank	: State Bank of India
A/c No	: 31264126681
IFSC Code	: SBIN0003401
Branch	: G.S. Road, Bikaner
email	: accounts@sadhumargi.com
Mob. No.	: 7073311108

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

सूचना– किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय– प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच– दोपहर 1:00 से 1:45 बजे तक

:: अनुक्रमणिका ::

शिक्षा का उद्देश्य	:	11
श्रमणोपासक हैडलाइन्स	:	15
गुरुचरण विहार	:	16
विविध समाचार	:	27
महत्तम महोत्सव	:	34
विनम्र श्रद्धांजलि	:	44
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	46
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	51
विहार सूची	:	55

सुविचार

समता

संयम नियम में व तप में सुस्थिर होना।
समता धरम ऊँचा, ज्ञानी ने बताया है।।
कुश और कनक में, जीवन अरु मरण में।
मान-अपमान सम, मुनि कहलाया है।।
हुआ नहीं होगा नहीं, समता के बिना मोक्ष।
धारे चाहे मुनि वेश, भव को बढ़ाया है।।
वीर कहे गौतम से, समता का साया पाओ।
साया पाया समता का, वही मोक्ष पाया है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

सदाचार से शोभे शिक्षा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.

भटके हुए को मार्ग पर लाया जा सकता है, रास्ता दिखाया जा सकता है, किन्तु जो जान-बूझकर भटकता रहे उसे मार्ग दिखाना व्यर्थ है। सदाचारी भी कभी-कभी सदाचार से स्खलित हो सकता है। उसे शासित किया जा सकता है, लेकिन स्वच्छन्दी को शासित करने में समय व शक्ति लगाना सामान्यत: उचित नहीं है। उसे शासित करने वाला खेदित ही होता है। यदि आँख में लज्जा हो तो स्वच्छन्दी को भी शिक्षित किया जा सकता है, पर जो निर्लज्ज हो उसे शासित करना टेढ़ी खीर है। पात्रता के बिना दी गई शिक्षा सार्थक नहीं होती। अयोग्य पात्र में दूध, दही या घी भी रखा जाए तो रखे जाने वाले वे पदार्थ भी विकृत होंगे और हो सकता है पात्र की भी हानि हो। सही पात्र में रखा गया पदार्थ सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार योग्य को दी गई शिक्षा सदाचार का प्रसार कराने वाली होती है। नीति में कहा गया है-

'**विद्या ददाति विनयम्**' विद्या से व्यक्ति विनयी-सदाचारी बनता है। विनय का अर्थ वर्तमान में नम्रता से लिया जा रहा है किन्तु यह अर्थ अत्यन्त संकीर्ण है। विनय का अर्थ सदाचार होता है। आगमकारों ने कहा है कि आठ प्रकार की कर्मग्रन्थि को भेदन करने वाला सारा आचार विनय है। ऐसा विनय शिक्षा से शासित को ही प्राप्त हो पाता है। स्वच्छन्द व्यक्ति सदाचारी नहीं बन पाता। उसके लिए शास्त्रों का कोई महत्त्व नहीं होता। उसकी मर्जी ही उसके शास्त्र होते हैं। वह जो विचार कर ले वही उसका विधान होता है। वह स्वयं की गणित से ही चलता है। समुदाय के साथ कैसा व्यवहार करना है, इससे उसको कोई मतलब नहीं होता। वह चाहेगा मैं जैसा चाहूँ, वैसा समुदाय चले। इस प्रकार वह मनमानी करता हुआ स्वच्छन्द पशु की तरह आचरण करता है। उसे कोई शासित करना चाहे तो काफी सोचना पड़ेगा कि वह उसे कैसे शासित करे? अश्व-हाथी आदि शासित होते हैं, वे इशारे से गति करते हैं। कहने का आशय कि शासित उसे किया जा सकता है जिसकी आँख में लज्जा हो। शासित वह हो पाता है जिसे शिक्षा सुहाती हो। शासित वह होता है जिसने सदाचार का स्वाद चखा हो।

माघ सुदी 2, रविवार, दिनांक : 13-12-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

शिक्षा का उद्देश्य

धर्मदेशना

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

परमात्मा की प्रार्थना करने के पीछे भक्त का भाव क्या होता है? यदि वह यह सोचता हो कि परमात्मा की प्रार्थना करने से मेरे घर के भंडार भरे रहेंगे, मुझे धन की प्राप्ति होगी, बल की प्राप्ति होगी या मेरी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाएगी, किसी ऐसे भाव से यदि वह प्रार्थना करता हो तो समझ लीजिए कि सच्चे मायने में परमात्मा के स्वरूप को वह जान ही नहीं पाया है। एक सच्चा भक्त कभी भी भौतिक पदार्थों की कामना नहीं करता। वह तो स्वयं भगवान-रूप बनने की तैयारी करता है। उसकी भावना यह रहती है कि तेरी और मेरी दूरी न रहे। सच्चा भक्त भगवान से दूरी को दूर करने का प्रयत्न करता है और प्रार्थना में भी उसकी भावना इसी रूप में प्रस्फुटित होती है। भगवान से दूरी या भगवान से विछोह वह सहन नहीं कर पाता। उसे तो भगवान और अपने बीच का अंतराल कचोटता रहता है, इसलिए चाहता है कि उस दूरी को वह समाप्त कर दे। वह कहता है-

''तू सो प्रभु, प्रभु सो तू है, भेद-कल्पना मेटो।''

भेद की कल्पना समाप्त कर दी जाए। नदी का पानी उत्ताल तरंगें लेता हुआ स्वयं को समुद्र में डाल देता है और समुद्र में गिरने के पश्चात् वह पूर्ण संतुष्टि का अनुभव करता है। वैसे ही भक्त भगवान में अपने अस्तित्व को विलीन कर स्वयं को विराट बना लेता है। फिर उसका अस्तित्व सीमित नहीं रह पाता, उसके अस्तित्व में विराटता आ जाती है। नदी का पानी समुद्र में गिरने के पश्चात् नदी का पानी नहीं रहता, अपितु वह समुद्र हो जाता है। जैसे अनेक बूँदें मिलकर समुद्र बनती हैं, एक बूँद में समुद्र नहीं होता, वैसे ही हम में भी अनेक शक्तियाँ हैं। उनका जागरण यदि हो जाए तो वह जागरण हमारे अस्तित्व को विकसित करने वाला बनता है।

नानेशनगर (दाँता) के बालक यहाँ पर उपस्थित हैं। वे ऐसी ही भावना व्यक्त कर गये हैं। अधिकारी भी ऐसी ही भावना व्यक्त कर गये हैं। हम समझें कि हमारे अध्ययन का लक्ष्य क्या होना चाहिए। आज बालक अध्ययन करते हैं, अध्यापक वर्ग अध्ययन करवाता है और माता-पिता तथा अभिभावक वर्ग भी उन्हें अध्ययन करवाना चाहता है, किन्तु देखना यह है कि अध्ययन किसलिए किया जाए। कानोड़ में बी.एड. कॉलेज में मुझसे कहा गया था कि विद्यार्थियों के बीच मैं अपनी कुछ भावनाएँ व्यक्त करूँ। वहाँ अपने विचार रखते हुए मैंने उनसे पूछा- 'आपके अध्ययन का उद्देश्य क्या है?' अलग-अलग विद्यार्थियों ने अलग-अलग उत्तर दिये थे। यहाँ भी यदि यही प्रश्न पूछा जाए तो सभी अलग-अलग विचार प्रकट करेंगे। कई विद्यार्थी कहेंगे- हम डॉक्टर बनने के लिए पढ़ते हैं। कई बोलेंगे- पढ़-लिखकर हम व्यापार करेंगे। कई व्यक्ति ऐसा भी कहने वाले होंगे कि हम रोजी-रोटी के लिए अध्ययन कर रहे हैं। कई यह भी कहेंगे कि हम ऊँची सर्विस पाने के लिए अध्ययन कर रहे हैं, किन्तु ये सारे अध्ययन के उद्देश्य नहीं हैं। आज हमारी पढ़ाई इन स्थितियों के साथ जुड़कर रह गई है। यह निश्चित है कि पढ़ने वाले की मृत्यु होगी और नहीं पढ़ने वाला भी कभी-न-कभी मृत्यु को प्राप्त करेगा-

''पठितव्यं तदपि मरितव्यं, न पठितव्यं तदपि मरितव्यं।।''

तब विचार करें कि ऐसी स्थिति में पढ़कर क्या करना? किसलिए संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि का अध्ययन करना? बोली न पढ़ें, वे भी बोल सकते हैं। उन्हें भी खाने के लिए रोटी मिल सकती है। कोई जरूरी नहीं है कि जो पढ़ेगा उसका ही पेट भरेगा। बहुत-से

पढ़े-लिखे भी भूखे रह जाते हैं। कभी-कभी पढ़े-लिखों के दिमाग में यदि भूत भर गया तो वे विद्वान् नहीं बनकर मूर्ख बन जाते हैं। ऐसा ही एक युवक चला जा रहा था। चलते-चलते उसे भूख-प्यास सताने लगी। उसने सोचा- क्या करूँ? पानी पीना है। कुछ आगे बढ़ा तो देखा एक कुआँ था। बाल्टी भी थी और डोरी भी लगी थी। उसने सोचा- कुएँ से निकालकर पानी पी लूँ। फिर विचार आया- मैं कैसे निकालकर पी सकता हूँ? मैं तो अमीर का लड़का हूँ। मेरे माता-पिता के पास अपार संपत्ति है। मैं स्वयं पानी निकालूँ तो मेरी पोजीशन डाउन हो जाएगी। इसलिए अपने हाथों से निकालकर नहीं पीऊँगा। कोई हमाल आ जाये तो निकलवाकर पी लूँगा। इस विचार के साथ वह कुएँ की मुंडेर पर बैठ गया।

थोड़ी देर में वहाँ एक दूसरा युवक आ गया। वह भी प्यासा था। उसने भी एक बार विचार किया कि पानी निकालकर पी लूँ, फिर सोचा- कैसे पीऊँ? मैं तो नवाब का लड़का हूँ। वह भी उसी जगह पर बैठ गया और बोला- पानी पीना तो है, पर मैं नवाबजादा हूँ। स्वयं निकालकर कैसे पीऊँ? पहले से वहाँ बैठे युवक ने भी कहा- पानी तो मुझे भी पीना है, पर मैं अमीरजादा हूँ, इसलिए निकाल नहीं सकता। जब तुम भी नहीं निकाल सकते तो मैं निकालूँ यह संभव नहीं है और दोनों प्यासे बैठे रहे। थोड़ी देर बाद वहाँ एक युवक और आया। वहाँ पहले से बैठे युवकों से उसने कहा- प्यास लगी है। पहले से बैठे युवकों ने कहा- हमें भी लगी है। देख रहे हैं, कोई पिलाने वाला आ जाए। फिर वे नवागन्तुक से बोले- आप ही मेहरबानी करो। आप पानी निकालो, हम भी पी लें, आप भी पी लो। नवागन्तुक ने कहा- तुम तो यहाँ आराम से बैठे हो, मैं तो अभी चलकर आया हूँ। मैं तो वैसे ही थका हुआ हूँ। तब उनमें से एक बोला- मैं अमीरजादा हूँ। दूसरा बोला- मैं नवाबजादा हूँ। मैं कैसे निकालूँ। तब तीसरे ने कहा- आप अमीरजादा हैं यह नवाबजादा है तो मैं भी शहजादा हूँ। मैं निकालूँ, यह कैसे संभव है? और वह भी वहीं मुंडेर पर बैठ गया। विचार कीजिए, अमीरजादा, नवाबजादा और शहजादा हैं, कुएँ के पास बैठे हैं, पानी निकालने के साधन बाल्टी एवं डोरी भी मौजूद हैं, किन्तु उसके बावजूद भी वे प्यासे बैठे हैं। क्या यह ठीक है? इतने में चौथा युवक वहाँ आया। तीनों एक साथ बोले- ''भाई! हम प्यासे हैं, मेहरबानी करो, पानी पिला दो।'' उसने कहा- ''आप तो यहाँ पहले से बैठे हैं। पीया क्यों नहीं?'' उन्होंने वही बातें दोहरा दी। चौथे व्यक्ति ने पानी निकाला, हाथ-पैर धोये, पानी पीया और खाली बाल्टी रखकर जाने लगा। जाते-जाते उसने कहा- आप अमीरजादा, नवाबजादा, शहजादा हैं तो मैं हरामजादा हूँ। जब-जब अमीरजादे, नवाबजादे और शहजादे पैदा होते हैं तो हरामजादे को भी पैदा होना पड़ता है। वे पढ़े-लिखे प्यासे ही रह गये और वह पानी पीकर चला गया।

विचार करने की आवश्यकता है। कभी-कभी अध्ययन करने के बाद भी व्यक्ति के माथे में ऐसा भूत घुस जाता है कि वह सोचने लगता है- मैं पढ़ा-लिखा विद्वान् हूँ। मैं काम कैसे कर सकता हूँ। विचार कीजिए कि जो पढ़ा-लिखा है, क्या वह सेवा नहीं करे? माता-पिता वृद्ध हैं तो भी वह उनकी सेवा नहीं करे? वे जो अनपढ़ हैं, वे करें। तब समझ लीजिए कि ऐसी शिक्षा, जो माता-पिता, गुरुजन से दूरी कराए या भाई-भाई में भेद कराए, क्या वह पढ़ाई हो सकती है? पढ़ाई तो कभी दूरियाँ नहीं बढ़ा सकती। विद्या के बारे में तो कहा गया है-

'विद्या ददाति विनयं।'

आप भी जानते होंगे, यदि नहीं जानते हों तो जान लीजिए कि जिस विद्या से विनय की प्राप्ति न हो, वह केवल तोता-रटन हो सकती है, विद्या नहीं। आपने कथा सुनी होगी कि एक तोते के मालिक ने तोते को रटा दिया कि 'बिल्ली आये तो बचते रहना।' तोते ने रट लिया- 'बिल्ली आये तो बचते रहना।' एक बार तोते को लेकर मालिक पिंजरे सहित तालाब के किनारे पहुँचा। वह स्नान की तैयारी करने लगा। थोड़ी देर के लिए पिंजरा खोल दिया कि तोता भी चहलकदमी कर

ले। तोता बाहर निकलकर वही रटी हुई बात बोलने लगा। इतने में बिल्ली आ गई और उसने तोते को पकड़ लिया। तोते ने एक बार तो चीं-चीं किया, फिर बोला- बिल्ली आये तो बचते रहना। बिल्ली के मुँह में पड़ा है, पर बिल्ली से बचते रहने की सीख रट रहा है। मालिक ने देखा तो उसे अफसोस हुआ कि इसने रटन तो कर लिया, पर बिल्ली से बचकर नहीं रह सका। ऐसी ही यदि हमारी पढ़ाई होती है तो वह जीवन को श्रेष्ठ नहीं बना पाएगी, उन्नत नहीं बना पाएगी। पढ़ाई ऐसी होनी चाहिए जिससे हमारे जीवन में विनय आए और उद्दंडता पैर न जमा सके। अभी आप बालक हैं, अनुशासन की सुन्दर व्यवस्था से गुजर रहे हैं। इसमें रहने की आवश्यकता भी है।

आजकल व्यक्ति बड़ा स्वार्थी हो गया है और स्वार्थ-सिद्धि के लिए विद्यार्थियों को कठपुतली बना लेता है। कई राजनेता विद्यार्थियों को उकसा देते हैं। उकसा कर आंदोलन, तोड़-फोड़ के लिए प्रेरित करते हैं। स्कूल-कॉलेज में तोड़-फोड़ करवाते हैं। क्या आगे जाकर तुम ऐसा काम करोगे? कोई राजनेता आकर कहे कि यह तो तुम्हारा अधिकार है, आंदोलन बिना काम नहीं होता। ऐसी भूमिका बनाकर वह कह दे कि हड़ताल करनी पड़ेगी, तोड़-फोड़ करनी पड़ेगी, आग लगानी पड़ेगी, तो क्या करोगे? नहीं, ऐसा कभी नहीं करना है। बच्चे यदि तैयार हैं तो अपने हाथ ऊँचे करें। सभी ने हाथ ऊँचे कर दिये हैं। सभी अपनी सहमति दर्शा रहे हैं। तब मैं प्रतिज्ञा करवा दूँ?

बोलो- ''मैं कभी भी गलत नीतियों का समर्थन नहीं करूँगा। भारत मेरा देश है। मैं भारत की संपत्ति का दुरुपयोग नहीं करूँगा। मैं भारत की संपत्ति का विनाश नहीं करूँगा।'' आपने प्रतिज्ञा की यह बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि यदि स्कूल में ही आपने अपने जीवन को विनय में ढाल लिया तो आपका जीवन संस्कारित बनेगा, नहीं तो कॉलेज में जाने के बाद आप असंस्कारित ही रह जाएंगे और आये दिन प्रिंसिपल से झगड़े कर लेंगे। अत: हमारा अध्ययन ऐसा हो जो हमारे जीवन को विनम्र बना दे। भाई-भाई, पिता-पुत्र को आपस में जोड़ने वाला रहे। वह अध्ययन, अध्ययन नहीं होता जो पिता को पिता और भाई को भाई मानने की मानसिकता का विकास नहीं करता। एक दृष्टांत सुनिए-

एक किसान ने अपने पुत्र को अध्ययन करवाया। उसने सोचा कि मैंने हल जोतने में जीवन गुजार लिया, पर आने वाले युग में यदि यह पढ़ाई नहीं करेगा तो इसका जीवन अंधकार से परिपूर्ण रह जाएगा। इसलिए उसने अपने लड़के को अध्ययन करवाया। जैसे-तैसे उसके लिए फीस-पुस्तकें आदि जुटाई और लड़के को एम.ए. पास करवा दिया। लड़के की सर्विस भी लग गई। फिर एक वर्ष बीता। अच्छी आमदनी हुई। उसने एक बंगला बनवा लिया। फिर पदोन्नति हो गई। जैसे ही पदोन्नति हुई, मित्र कहने लगे कि साहब, जब सर्विस लगी थी तब भी पार्टी नहीं दी थी। इतना समय निकल गया है, अब तो पदोन्नति भी हो गई है। अब तो पार्टी देनी ही पड़ेगी। उसने भी दोस्तों की बात स्वीकार कर ली। पार्टी का आयोजन किया गया। नये बंगले में डाइनिंग टेबल लगायी गयी। सारी व्यवस्था हो गयी। पिता को भी जानकारी मिली कि वह मित्रों को पार्टी दे रहा है। उसके मित्र बड़े-बड़े अफसर हैं और बड़े-बड़े ओहदों पर हैं। उसने सोचा- लड़के को पढ़ाया, उसकी सर्विस लग गई। अब वह पार्टी दे रहा है तो मैं भी चलूँ। उसने भी ऊँची धोती पहनी, नया साफा बांधा, कुर्ता पहना, जूते पहने, हाथ में डंडा लिया और वहाँ पहुँच गया। देखा कि टेबलों के किनारे कुर्सियाँ लगी थीं। एक कुर्सी पर वह भी बैठ गया। लड़का और उसके दोस्त अलग कुर्सियों पर बैठे थे। पार्टी चालू हो गयी। इतने में एक मित्र ने किसान के पुत्र से पूछा; जो अब साहब बन गया था- ''यह व्यक्ति कौन है?'' साहब ने जवाब दिया- ''माय सर्वेन्ट।'' किसान ने सुना तो सोचा- मेरा लड़का जब स्कूल से पढ़कर आता था तो मैं पूछता था कि आज क्या पढ़ा? तब वह मुझे मदर, फादर, सिस्टर के अर्थ बताता था। उसने बताया था कि मदर का मतलब माता होता है और

फादर का मतलब पिता है। पर आज तो मुझे यह सर्वेन्ट बता रहा है। मैंने तो सुना है कि सर्वेन्ट नौकर को कहते हैं। उसे गुस्सा आ गया। उसने अपने पैर की जूती उतारी और लड़के के माथे पर ठोकते हुए उसके मित्रों से कहा– ''साहब! मेरा परिचय इसे क्या पूछते हो, मुझसे पूछिए। मैं इसकी माँ का हसबैंड हूँ।'' सारे लोग हक्के–बक्के रह गए। अपने पिता का परिचय उसने ऐसा क्यों दिया, विचार करें।

बन्धुओ! जिस समय यह संस्था चालू हुई थी, उस समय भाव ये रहे थे कि जिस मिट्टी ने आचार्य श्री नानालालजी म.सा. जैसे सपूत को जन्म दिया, उसमें जरूर कुछ–न–कुछ खासियत होगी। इसलिए उस क्षेत्र का चयन किया गया। यह भी अनुभव किया गया था कि आस–पास के पूरे क्षेत्र के कुएँ गर्मी में सूख जाते हैं, किन्तु नानेशनगर के कुएँ सूखते नहीं। यह इनकी खासियत है कि दूसरे कुएँ सूख जाते हैं, पर ये सूखते नहीं। दूर–दूर के लोग भी पानी ले जाते हैं, फिर भी यहाँ पानी बना रहता है। ऐसी कई विशेषताएँ उस भूमि में है। जिसने नानेश को रचा उनकी चारित्रिक महिमा अपरम्पार है। ऐसी भूमि का सौभाग्य आपको मिला है। अत: ध्यान रखें कि ऐसा न हो कि आप केवल अध्ययन के पुतले रह जाएँ। ज्ञान के साथ विनय और कृतज्ञता के गुण भी आप सीखें। शास्त्रकार कहते हैं कि माता–पिता, गुरुजन एवं मुसीबत में जिन्होंने प्राणदान दिया, उनका उपकार नहीं चुकाया जा सकता। माता–पिता को भले ही अपनी चमड़ी के जूते बनाकर पहना दें, गुरु के उपकार के बदले भले जिन्दगीभर उनकी सेवा–शुश्रूषा करें और जिसने जिन्दगी की रक्षा की, उनकी पूरी जिन्दगी सेवा करते रहें। फिर भी शास्त्रकार कहते हैं कि उनसे उऋण नहीं हो पाएंगे। कृतज्ञता बहुत बड़ा गुण है। एक पशु भी इतना समझता है, पर इन्सान चूक कर जाता है। वह बहुत बार इन्सानियत खो देता है। बड़े सेठ के यहाँ मुनीम रहता है। सेठ उसे आश्रय देता है। वही यदि घोटाला कर ले, सेठ को चकमा देकर स्वयं सेठ बन जाए तो दुनिया की निगाह में वह सेठ हो सकता है, पर ज्ञानीजनों की निगाह में वह कृतघ्न और ठगोरा ही रहेगा। सच्चा इन्सान वह नहीं हो सकता। अत: हमारी पढ़ाई हमें इन्सान बनाने वाली हो। आप भले ही बड़े राजनेता बन जाएँ, बड़े से बड़े पद पर चले जाएँ, फिर भी अपने गुरु का अपमान या तिरस्कार नहीं करें।

आपने सुना होगा कि स्वामी विवेकानन्द के गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे। वे सामान्य अवस्था में रहते थे। एक अंग्रेज स्वामी विवेकानन्द से बहुत प्रभावित हुआ और कहा कि मैं आपके गुरु के दर्शन करना चाहता हूँ। वह आश्रम में पहुँच गया और पूछा कि गुरुजी कहाँ हैं। पता चला अंदर हैं। वह अंदर गया और घूम–फिरकर वापिस बाहर आ गया। कहा कि अंदर तो मुझे गुरुजी नजर नहीं आए। स्वामी विवेकानन्द उसके साथ अंदर गए। वहाँ श्री रामकृष्ण परमहंस सामान्य व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे। वे कुछ कार्य में लगे हुए थे। अंग्रेज ने पूछा– ''वे कौन हैं?'' स्वामी विवेकानन्द ने कहा– ''ये ही तो मेरे गुरु हैं।'' अंग्रेज के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। ये आपके गुरु! मैं तो इन्हें कुछ और ही समझ रहा था। यह गुरु कैसे हो सकते हैं? विवेकानन्द ने कहा– ''आपकी संस्कृति और भारतीय संस्कृति में यही तो अंतर है। आप बाहर को देखते हैं, भारतीय संस्कृति अंतरंग को देखती है। इसलिए विदेशी जीवन बाहरी चकाचौंध से प्रभावित होता है, जबकि भारतीय जीवन अध्यात्म–प्रधान रहा है। यह बात अलग है कि आज उस पर भी पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ने लगा है और भारतीय अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।''

पढ़ाई का लक्ष्य होना चाहिये पढ़–लिखकर मानव बनना, इन्सान बनना, किन्तु कृतघ्न नहीं होना। अपना उपकार करने वालों के प्रति सदा कृतज्ञ भाव रहने चाहिये। यदि ये भाव रहते हैं तो ही पढ़ाई–लिखाई सार्थक होती है और ऐसी पढ़ाई ही हमारी सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने में समर्थ होती हुई आत्मा के अस्तित्व भाव को विकसित कर पाएगी।

साभार– राम उवाच–9 (गंगा लौट हिमालय आए)

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक

हैडलाइन्स

- देवनागरी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन 11 से 17 मार्च तक आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र उदयपुर में सम्पन्न; अनेक विद्यार्थी एवं शोधार्थी हुए लाभान्वित।
- देशभर में श्रमण भगवान महावीर स्वामी का 2622वाँ जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश के 71वें जन्मदिवस पर धर्म-ध्यान, त्याग-तप की धूम; जन-जन ने मनाये ये विशिष्ट दिवस।
- केन्द्रीय संघ पदाधिकारियों, प्रवृत्ति संयोजकों, अंचल प्रभारियों व कार्यसमिति सदस्यों द्वारा पाँच दिवसीय कर्नाटक-आन्ध्रप्रदेश अंचल प्रवास सम्पन्न। प्रवास के दौरान इस क्षेत्र के अनेक नगरों में स्थानीय संघों के साथ बैठकों का आयोजन कर संघ प्रवृत्तियों व आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त आयामों की प्रभावना हुई।
- महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सम्पन्न श्रुत आरोहक भाग-1 की परीक्षा में लगभग 800 प्रतिभागियों ने परीक्षा दी। अब कर कमाल सीजन-2 का ग्राण्ड फिनाले 18 जून 2023 को होना संभावित।
- आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार, सेठ श्री चम्पालालजी सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार एवं स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार हेतु अन्तिम तिथि 30 मई 2023 निर्धारित।
- मुमुक्षु बहिन सुश्री कुमकुमजी कोटड़िया सुपुत्री कमलेशजी-मंजूदेवी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.) का अनुज्ञा-पत्र परिजनों द्वारा गुरुचरणों में समर्पित। मुमुक्षु बहिन ने संकल्प-पत्र समर्पित किया। आचार्यदेव ने 28 मई 2023 के लिए दीक्षा हेतु स्वीकृति प्रदान की।
- बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का वर्षीतप पारणा महोत्सव हेतु 9 अप्रैल को चित्तौड़गढ़ में हुआ सादगीपूर्ण मंगल प्रवेश।
- गुरुदेव के आयामों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु युवा संघ खटखटा रहा हर हृदय का दरवाजा।
- महिला समिति की हर एक इकाई के पुरुषार्थ से देशभर की महिलाएँ, युवतियाँ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बंधती हैं एक सूत्र में।
- चारित्रात्माओं के विहार संबंधी विवरण की जानकारी हेतु साधुमार्गी वेबसाइट पर लिंक जारी किया गया।
- आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र उदयपुर द्वारा एक बार फिर ऑनलाइन समीक्षण ध्यान शिविर का आयोजन 21 से 23 अप्रैल को किया गया।
- महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत कई धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम अनवरत जारी।
- श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा Artificial Intelligence v/s Emotional Intelligence पर रोचक शिविर आयोजित।

जिनशासन के वरदान की, जय बोलो गुरु राम की।
राम गुरु महान हैं, जिनशासन की शान हैं।
संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक सोल्लास सम्पन्न

मुमुक्षु कुमकुम कोटड़िया की जैन भागवती दीक्षा 28 मई 2023 के लिए घोषित, परिजनों ने दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया

वृंदावन विहार, जयप्रकाशजी बाबेल का निवास, से. 3, पौषधशाला, भड़भूजा घाटी, भोपालपुरा, उदयपुर

जिनके आभामण्डल में जवाहर की किरणें प्रकाशमान हैं,
जिनकी आँखों से गणेश की शांति प्रवाहमान है,
जिनकी वाणी में हर शब्द नाना का विद्यमान है,
महावीर के सपनों का समाज ही जिनका अनुष्ठान है,
ऐसे मेरे गुरु राम महान हैं।

सूर्य से भी अधिक तेजस्वी, चन्द्रमा से भी अधिक शीतल, वाणी में सत्यता व मधुरता, व्यवहार में आत्मीयता और संयम में सुदृढ़, ऐसे युगनिर्माता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा-9 महाराणा प्रताप एवं झीलों व श्रद्धा-भक्ति-आस्था की नगरी उदयपुर के उपनगरों को अपनी पावन चरणरज से निरन्तर पावन-पवित्र कर रहे हैं। अलौकिक महापुरुष के पावन दर्शन कर धर्मप्रेमी जनता निहाल हो रही है। सत्य, अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्मकल्याणक धर्माराधना, तप-त्याग के साथ मनाया गया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर भव्यात्माएँ संयम एवं स्व-पर कल्याण के पथ पर आगे बढ़ रही हैं। इसी कड़ी में 20 वर्षीय मुमुक्षु कु. कुमकुम कोटड़िया सुपुत्री श्री कमलेशजी-संजूदेवी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.) मूल निवासी लोहावट (राज.) की दीक्षा हेतु पारिवारिकजनों ने अनुज्ञा-पत्र आचार्यदेव के श्रीचरणों में समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने अनुपम कृपा का वर्षण करते हुए 28 मई 2023 के लिए दीक्षा हेतु स्वीकृति प्रदान की। इससे सर्वत्र हर्ष का माहौल बन गया।

01 अप्रैल 2023, वृंदावन विहार, से. 3। प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं परम कृपालु दयानिधि आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नवपद की आराधना से आत्मा निर्मल और पवित्र हो जाती है। नवपद ओली का आज चतुर्थ दिवस उपाध्याय पद की आराधना का है। आचार्य मस्तक हैं, तो उपाध्याय आँख हैं। आचार्य पद में ही उपाध्याय पद का

आत्महित में सदैव आगे बढ़ें।
-आचार्य श्री रामेश

हमारा धर्म भोग का नहीं, त्याग का है।
-उपाध्याय प्रवर

समावेश हो जाता है। जिनके समीप जाकर पठन-पाठन किया जाता है, जो जिज्ञासा का समाधान कर देते हैं, जो उलझी गुत्थी को सुलझा देते हैं, वे उपाध्याय हैं। स्व के साथ पर का कल्याण किया जाता है। जो पच्चीस गुणों के धारी हैं। आज सबसे बड़ी बीमारी है कंफ्यूजन। व्यक्ति इसी में उलझा हुआ है, लेकिन उपाध्याय भगवन् स्पष्टता का बोध कराते हैं। हमारा सौभाग्य है कि इस साधुमार्गी संघ में आचार्य के साथ उपाध्याय प्रवर भी विद्यमान हैं, जो जिनशासन की अद्भुत प्रभावना कर रहे हैं। उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. उच्च कोटि के साधना पुरुष हैं।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार में रहते हुए हम संसार में ना रहें। हर क्रिया में यतना विवेक का परिचय दें। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि सभा में सुशोभित थे। एक शास्त्र का हिन्दी पठन, प्रतिदिन 15 मिनट सत्साहित्य पढ़ने एवं माह में एक आयम्बिल करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वबोध प्रदान किया।

02 अप्रैल। प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना एवं आचार्यदेव के श्रीमुख से मंगलपाठ पश्चात् धर्मसभा के प्रारंभ में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने अरिहंत भगवान का भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि पाँच पद की आराधना करें। अरिहंत के 12 गुण, सिद्ध भगवान के 8 गुण, आचार्य के 36 गुण, उपाध्याय के 25 गुण, साधु के 27 गुण होते हैं। ये 108 गुण हमारे भीतर भी आएँ ऐसा पुरुषार्थ हम करें। मंत्रों के उच्चारण से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, मन शांत हो जाता है। कीर्तन लय में प्रभु के नाम के प्रभाव से मन शांत हो जाता है। जो साधता है वो साधु है। जो मन-वचन-काया को साधता है वो साधु है। हम दूसरों को साधने में लगे हुए हैं। साधु को जैसा आहार-पानी मिले वैसा ले लेते हैं, यही साधना है। '**साध्यते इति साधुः**' जो स्वयं को साधने में लगे हैं, वे साधु हैं। वेश से साधु नहीं साधना से साधु होता है। पंच परमेष्ठी व्यक्तिपूजक नहीं गुणपूजक हैं। आज हम साधुओं में भी तेरा-मेरा भेदभाव करते हैं।

संप्रदाय ना धर्म है, धर्म में नहीं विकार।
धर्म सिखावे एकता, धर्म सिखावे प्यार।।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हिंसा धर्म नहीं हो सकती। धर्म, श्रद्धा, आचरण, आस्था, भावनाओं से चलता है। हम अहिंसा को महत्त्व दें। अहिंसा धर्म का प्राण है। हम धन को नहीं धर्म को महत्त्व दें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि धन भौतिक सुख दे सकता है, लेकिन धर्म आत्मिक सुख देता है। भौतिकता की चकाचौंध में जीवन उलझकर न रह जाए। जो समय का सदुपयोग करता है वह जीवन सार्थक कर लेता है। भगवान महावीर के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं।

सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने माँ-बाप से कभी अलग नहीं होने का संकल्प लिया। सुश्राविका अनितादेवी बाफना धर्मसहायिका अतुलजी बाफना, रतलाम के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति संदेश प्राप्त किया। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

सत्य अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव

दुनिया को जीते वह वीर कहलाता है।
अपने आपको जीते वो महावीर कहलाता है।।

03 अप्रैल, वृंदावन विहार से. 3। करुणा के सागर, सत्य-अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का 2622वां जन्मकल्याणक महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति, उल्लासमय वातावरण में सकल जैन समाज द्वारा मनाया गया। प्रातः

भगवान महावीर एवं गुरु राम की भक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना हुई तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान कर धन्य-धन्य कर दिया। नवकार महामंत्र जाप के पश्चात् धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने *''हे महावीर! तुम हो मेरे जीवन आधार, तेरी पूजा करूँ मैं हर बार''* एवं आचार्य भगवन् द्वारा रचित कविता *''तुम बिन सब कुछ सूना लगता, तुम हो मेरे जीवन प्राण''* प्रस्तुत कर माहौल को भक्तिमय बनाते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के विराट व्यक्तित्व को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। भगवान महावीर ने 5 माह 25 दिन के उपवास का पारणा उड़द के बाकुले से किया। क्या हम खाना खाते समय गुरुर तो नहीं करते? भगवान महावीर के कानों में कील ठोके गये। क्या हम कटु वचन सुनने के बाद शांत रह पाते हैं? एक ही रात्रि में भगवान महावीर को संगम ने 20 उपसर्ग दिये, लेकिन भगवान ने एक भी अपशब्द नहीं कहा। क्या हमारी किसी से अनबन हो जाए तो हम बोलचाल बंद करते हैं या उन्हें क्षमा कर देते हैं? आत्मचिंतन करें। अंत में *''महावीर का नाम मंगल-मंगल है''* भजन प्रस्तुत किया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का जितना हम पालन करेंगे, उतना हम प्रभु के निकट रहेंगे। हर व्यक्ति के अन्दर गुण हैं, उन्हें देखना सीखें। हम प्रशंसा करें, पर किसी की निंदा न करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि आज महावीर को मानते हैं, पर महावीर की नहीं मानते। महावीर ने महावीरत्व की यात्रा नयसार के भव में प्रारंभ की।

वेज-नॉनवेज एक साथ रखने वाली होटलों में खाने-पीने का त्याग सम्पूर्ण सभा ने लिया। भगवान महावीर पर खुला प्रश्नमंच कार्यक्रम रखा गया। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने साधु समाचारी पर विशेष व्याख्या प्रस्तुत की।

04 अप्रैल। प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ श्रवण करवाकर लाभान्वित किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नवपद ओली का क्रम जारी है। सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्षमार्ग हैं। सम्यक् दर्शन का विशेष महत्त्व है। समकित के अभाव में सारी क्रियाएँ व्यर्थ है। अरिहंत मेरे देव हैं। निर्ग्रंथ मेरे गुरु हैं। धर्म, अहिंसा, दया प्रधान है। जिसका मोक्ष जाना निश्चित है, वह भवी है। पाप करते हुए हमारा मन ऊँचा-नीचा होता है या नहीं? जीवों के प्रति दया, करुणा भाव है या नहीं? देव, गुरु, धर्म में हमारी अटूट श्रद्धा है या नहीं? आत्मचिंतन करें। सम, संवेग, निर्वेग, अनुकंपा, आस्था, समकित के इन पाँच लक्षणों को जीवन में धारण करें।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस जग में कोई हमारा नहीं है। आत्मतत्त्व सार है, बाकी सब बेकार है। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त उत्क्रांति का पालन कर आदर्श उपस्थित करें। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

हीरा मुख से कब कहे लाख हमारो मोल

05 अप्रैल। प्रातः प्रार्थना एवं आचार्यदेव के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नमो चरित्तस्स यानी चारित्र को नमस्कार हो। जो कर्म बंधे हैं, उन्हें समाप्त करना चारित्र है। आते हुए कर्मों को रोकना संवर है। अन्दर जो कर्म भरे हुए हैं, उन्हें बाहर निकालना चारित्र है। सामायिक चारित्र दो प्रकार से किया जाता है- एक जो कुछ समय के लिए किया जाए और दूसरा जो जावज्जीव के

लिए किया जाता है। यथाशक्ति इस दिशा में हम आगे बढ़ें। आज आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस पर गुरु के आदेश का पालन करना चारित्र है। गुरुदेव अनमोल हीरा हैं। हीरा मुख से कब कहे लाख हमारो मोल।

कंचन तजना सरल है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजनी येह।।

कंचन तजना सहज है, पर मान तजना बड़ा ही कठिन है। आचार्य भगवन् मान, सम्मान, अपमान इन सबसे ऊपर उठे हुए हैं। आज किसी का नाम नहीं लेने पर प्रतिक्रिया होने लग जाती है। अन्त में गुरुभक्ति गीत *''निर्मल जल-सा मन है जिनका, सागर सम गंभीरा हैं, ऐसे गुरुवर राम हैं मेरे, नाना गुरु का चेहरा है''* प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर सम्पूर्ण माहौल को राममय बना दिया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने भजन *''गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गये''* प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों को हम आत्मसात् कर उन्हें जन-जन तक पहुँचाए तभी आचार्यदेव का जन्मदिवस मनाना सार्थक होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद चतुर्विध संघ में शोभायमान थे। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने आचार्य श्री रामेश के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने की अपील की। कई भाई-बहिनों ने एकासन, आयम्बिल, उपवास आदि तपाराधना की। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने एक-एक व्यक्ति को व्यसनमुक्त कराने एवं कोल्डड्रिंक्स सेवन का त्याग करने का नियम लिया।

दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में आगमज्ञान, समाचारी व्याख्या, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं समता प्रचार संघ के संयोजक मण्डल सदस्यों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

06 अप्रैल। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण से कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जो ओली तप की आराधना करते हैं, वे धन्य हैं। आज नौवां दिन '**नमो तवस्स**' तप के माध्यम से जो अपनी आत्मा को भावित करते हैं, वास्तव में वे धन्य हैं। इच्छा का निरोध करना तप है। मन की इच्छा का त्याग करना तप है। खूब गर्मी लग रही हो और पंखा, ए.सी. चालू नहीं करना, मन का नियंत्रण है। कहा जाता है कि एक गाली को सहन करने वाले को 6 माह की तपस्या का फल मिलता है। नवकार महामंत्र नहीं बदला है, पर हमारा मन बदल गया है। श्रद्धा-भक्ति से नवकार का जो जाप करता है, उसका बेड़ा पार हो जाता है। *''जपो रे जपो मंत्र नवकार बड़ा ही सुखदायी है''* गीत प्रस्तुत कर श्रद्धामय माहौल बना दिया।

नवकार महामंत्र की माला फेरे बिना मुँह में पानी नहीं लेने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना में जीवन को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल सभा में सुशोभित थे। शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का निकुम्भ, चिकारड़ा, मंगलवाड़, देबारी होते हुए गुरुचरणों में उदयपुर पधारना हुआ।

श्री अटलमुनिजी म.सा., साध्वी श्री चिदानन्दश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. सहित कई

श्रावक-श्राविकाओं ने भी ओली आयम्बिल तप की आराधना की। प्रत्येक पूर्णिमा को आचार्य भगवन् के दर्शन करने वाले बीकानेर, जावरा, जावद, रतलाम, अजमेर, निम्बाहेड़ा एवं जेठाणा सहित अन्य अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। कई भाई-बहिनों ने कोल्डड्रिंक्स का त्याग एवं घर में प्रतिदिन 10 मिनट नवकार महामंत्र जाप करने का नियम लिया। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान एवं समाचारी का अध्ययन करवाया एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने वंदना की विधि एवं लाभ पर उपयोगी व्याख्या प्रस्तुत की।

07 अप्रैल। परम पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण करने का अनुपम अवसर मिला एवं प्रातःकालीन प्रार्थना हुई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधु के पहले श्रावक का पद गुणों के सतत् विकास की यात्रा है। साधु हो या श्रावक गुस्सा नहीं करने एवं कंट्रोल करने की साधना आवश्यक है। साधु हर परिस्थिति में शांत रहे। भगवान महावीर के कानों में कील ठोके गए, उन पर कुत्ते छोड़े गए, पत्थर भी मारे गए और पैरों पर खीर पकायी गयी, फिर भी उन्होंने क्रोध नहीं किया और वे पूर्ण शांत रहे। साधु हो या श्रावक सभी के लिए समभाव की साधना जरूरी है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार से ध्यान हटाकर आत्मा की ओर लगाएँ तो उत्पन्न, व्यय, द्रव्य, इन तीन शब्दों से संसार का ज्ञान प्राप्त हो सकता है, पर संसार से मन हटता नहीं है।

भोजन बनाने एवं भोजन करने के स्थान पर गुस्सा नहीं करने का संकल्प सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने समाचारी व तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

08 अप्रैल। शुभ बेला में प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना हुई तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में सदैव इन बातों का ध्यान रखें- 1. गुणों को प्राप्त करना, 2. गुणों में वृद्धि करना, 3. गुणों को गहरा करना, 4. गुणों को टिकाए रखना एवं 5. गुणों में निर्मलता व विनम्रता रखना। एक गुण काफी है मोक्ष दिलाने के लिए। सेवा का गुण नन्दीषेण मुनि ने अपनाया। भक्ति, विनय का गुण मृगावती ने अपनाया। इससे उनको बेड़ा पार हो गया। अध्यात्म के क्षेत्र में हम निरन्तर कषायों को कम करते हुए सद्गुणों को जीवन में आगे बढ़ाएँ।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि किसी के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिये। सबसे कठिन तपस्या मोह त्याग की है। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं की भी धर्मसभा में उपस्थिति रही। साध्वी श्री सुवृष्टिश्रीजी म.सा. ने तेले तप की आराधना की।

सुश्राविका चन्द्रकलाजी गाँधी-भीमगढ़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कराया।

अब तक क्या किया और क्या करना बाकी है

09 अप्रैल। आराध्यदेव आचार्य भगवन् की अनुपम देन रविवारीय समता शाखा में भाग लेने के लिए लोग उमड़ रहे थे। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि

अब तक जीवन में क्या किया है?

क्या करना बाकी है?

क्या करना संभव है, पर कर नहीं पा रहे हैं?

इन तीन बिन्दुओं पर डायरी में लिखकर आत्मचिंतन करें। नवकारसी, सामायिक, स्वाध्याय, द्रव्य की मर्यादा, रात्रिभोजन त्याग, नवकार माला, वन्दना आदि हम बहुत कुछ कर सकते हैं। भोजन, धन और स्त्री में संतोष रखना चाहिये एवं भजन, धर्म और ज्ञान में संतोष नहीं करना चाहिए।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे अन्दर अनन्त शक्ति है। अपने भीतर की ओर देखना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।

साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी, गुरुवाणी सर्वश्रेष्ठ है। विषय भावों को छोड़ धर्मध्यान में जीवन को लगाएँ। साध्वी श्री सुवृष्टिश्रीजी म.सा. ने ***''क्या ढूंढता है बुराई किसी में''*** हृदयस्पर्शी गीत प्रस्तुत किया। नीमच महिला मण्डल ने प्रतिदिन 1 घण्टा मौन रहने का संकल्प लिया। अक्कलकुआँ युवा संघ ने चातुर्मास हेतु विनती प्रस्तुत की। बच्चों को प्रतिदिन 10 मिनट संस्कार देने एवं अष्टमी व चतुर्दशी को रात्रिभोजन त्याग का नियम कई लोगों ने लिया।

दोपहर में आचार्य भगवन् ने जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में एक भक्त द्वारा पूछे गए सवाल 'क्रोध से कैसे बचें?' के समाधान में फरमाया कि क्रोध आने के क्षणों में उस स्थान से चले जाएँ। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में फरमाया कि ज्ञान और ज्ञानी की आशातना करने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। ज्ञान में अन्तराय नहीं देना है। ज्ञान देने में सहयोगी बनना है। एक और प्रश्न के प्रत्युत्तर में आत्महित की दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दी।

10 अप्रैल। प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुणीजनों के प्रति प्रमोदभाव और अहोभाव होना चाहिये। मैं व्रत का पालन करूँ तो सर्वश्रेष्ठ, नहीं तो जो व्रत पालन कर रहे हैं उनका सहयोगी बनूँ। किसी के प्रति दुर्भाव एवं उनके कार्यों के प्रति प्रतिक्रिया ना करें। श्रद्धा-भक्ति के साथ हम जो भी धर्म कार्य करते हैं उसका फल निश्चित प्राप्त होता है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने समकित के 5 लक्षण- सम, संवेद, निर्वेद, अनुकंपा, आस्था को जीवन में निरंतर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी।

शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री गुणसुन्दरीश्रीजी म.सा., साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल सभा में सुशोभित थे। महिला मण्डल ने ***''जिनशासन के वीरों को वंदन है''*** गीत प्रस्तुत किया।

11 अप्रैल। मंगलमय प्रार्थना हुई एवं आचार्य भगवन् ने पावन वाणी में मंगलपाठ प्रदान किया। जीवन निर्माणकारी प्रवचन सरिता में धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुणीजनों के प्रति ईर्ष्या भाव नहीं होना चाहिये। ***''देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ''***। अच्छे कार्य की सदैव तारीफ करें। तारीफ काम करने वालों की होती है। काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं है। जो लोगों की मदद करता है वह सबका प्यारा होता है। कभी यह शिकायत नहीं रहनी चाहिये कि मैं इसका काम करता हूँ फिर भी मुझे श्रेय नहीं मिलता। सदैव अच्छे कार्य करते रहना चाहिये। माईनस पॉइंट सबके हैं, सब अधूरे हैं, पर हमें सदैव गुणदृष्टि रखनी चाहिये।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अपनी प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करें। सच्चे धर्म को जानें और उस पर प्रगति करें। श्रावक को 14 नियम प्रतिदिन चितारने चाहिये। शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में शोभायमान थे। कई भाई-बहिनों ने प्रतिदिन 1 घण्टा मौन रखने का संकल्प लिया।

सुश्रावक रत्नेशकुमारजी सहलोत-निम्बाहेड़ा के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति एवं संदेश प्राप्त किया।

मुमुक्षु कुमकुमजी कोटड़िया का अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित सर्वत्र हर्ष की लहर; 28 मई 2023 के लिए दीक्षा घोषित

वीतराग की राह पर चलकर वीतरागी बनना है।
अब तो संयम लेकर आत्मकल्याण करना है।।

12 अप्रैल। प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से पावन मंगलपाठ का उच्चारण होने के पश्चात् धर्मसभा में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव हो। गुणीजनों के प्रति प्रमोद भाव हो। दुःखी जीवों के प्रति दया एवं करुणा का भाव हो तथा विपरीत भाव रखने वालों के प्रति माध्यस्थ भाव रखें। कोई मुझे पूछे या नहीं पूछे, मेरी सुने या नहीं सुने, कोई गम नहीं होना चाहिये। आनन्द में जीवन जीना चाहिये। आपकी चर्या देखकर पता लग जाता है कि आपका कुल कैसा है। बड़ों और छोटों के साथ सुन्दर व्यवहार रखें। उच्च व शालीन भाषा का प्रयोग करें। विरल आत्मा ही अपनी संतानों को श्रेष्ठ संयम मार्ग की ओर आगे बढ़ाते हैं। कोटड़िया परिवार, धमतरी/लोहावट, जो आज गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित कर रहे हैं; यह उनके सुन्दर संस्कारों का परिचायक है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मानव जीवन का सार संयम है। दीक्षा लेने के भाव आज हम सभी अपने भीतर जागृत करें। साध्वी श्री सुभगश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि संयम बिना कोई मोक्ष जाने वाला नहीं है।

मुमुक्षु कुमकुम कोटड़िया ने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं परिजनों के आशीर्वाद से मेरा वर्षों का सपना साकार रूप लेने जा रहा है। इस उपकार को मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी। शुद्ध संयम का पालन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करूँ।

वीरपिता कमलेशजी कोटड़िया, धमतरी (मूल निवासी लोहावट) ने परिजनों की ओर से अनुज्ञा-पत्र का पठन करते हुए कहा कि कुमकुम को बचपन से ही परिजनों एवं चारित्रात्माओं द्वारा सुन्दर संस्कार प्राप्त हुए हैं। धमतरी में शासन दीपिका साध्वी श्री पावनश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन चातुर्मास में वैराग्य भावों को आगे बढ़ाने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ और महापुरुषों की कृपा से यह पावन प्रसंग उपस्थित हुआ है।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने उभय गुरु-भगवंतों के अतिशय का बखान करते हुए दीक्षार्थी परिचय प्रस्तुत किया। केसरिया-केसरिया गीतों एवं जय-जयकारों से माहौल गूँज उठा। परिजनों एवं मुमुक्षु बहिन कुमकुमजी ने अनुज्ञा-पत्र एवं प्रतिज्ञा-पत्र परम दयालु आचार्य भगवन् के पावन चरणों में जैसे ही समर्पित किये, सम्पूर्ण सभा जयनादों से गुंजित हो गई। वीरदादा श्री विजयलालजी कोटड़िया, मुंगेली एवं समस्त कोटड़िया परिवार द्वारा गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया गया।

शाम को आचार्य भगवन् ने मुमुक्षु कुमकुम कोटड़िया की जैन भागवती दीक्षा हेतु 28 मई 2023 के लिए स्वीकृति प्रदान की। **''राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है''** आदि जयघोषों से सम्पूर्ण सभा गूँज उठी।

मुमुक्षु कुमकुम कोटड़िया ने आरुग्गबोहिलाभं में रहकर अपनी प्रतिभा को आगे बढ़ाया है। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में शास्त्रों और तत्त्वों का गहन अध्ययन किया है। लगभग 5 वर्ष आपका वैराग्यकाल है। आपने 2 बार स्वाध्यायी सेवा भी दी है। जैन सिद्धान्त भूषण और कोविद की परीक्षाएँ भी आपने दी हुई है।

13 अप्रैल, पौषधशाला भड़भूजा घाटी। सुमधुर स्वरों में प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् द्वारा मंगलपाठ प्रदान करने के पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा का वृन्दावन विहार से. 3 से विहार करके पौषधशाला भड़भूजा घाटी में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने शासन दीपिका साध्वी श्री शांतप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री पंकजश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द को दर्शनलाभ प्रदान किया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि चाहे साधु हो या श्रावक, जीवन में सदैव गुणों को प्राप्त करना, गुणों को सुरक्षित रखना और गुणों का आनंद लेना चाहिये। मेरा मन ही मेरा मित्र और शत्रु है। मन यदि सही रास्ते पर लग गया तो मेरा मित्र है और गलत रास्ते पर लग गया तो शत्रु है। जीवन में कभी भी हताशा, निराशा, आत्महत्या जैसे अवसाद नहीं लाने चाहिये।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने मोबाइल के व्यर्थ उपयोग से बचने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि धन्य हैं वो आँखें जो गुरुदेव के दर्शन करें। धन्य हैं वे कान जो गुरुदेव की वाणी सुनें। धन्य है वो हृदय, जिसमें गुरुदेव विराजें। भक्ति में वो शक्ति होती है जो असंभव को संभव बना देती है। आचार्य भगवन् की कृपा को हम कभी नहीं भूल सकते।

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री आदर्शप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सभा में सुशोभित थे। स्थानीय संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान पुण्यवाणी का उदय बताया।

14 अप्रैल। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना हुई। आचार्य श्री रामेश ने अपूर्व दयादृष्टि रखते हुए मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्ष मार्ग के साधन हैं। इससे पहले गुणों को प्राप्त करने की समझ होनी चाहिये। जिस दिन गुणों की गहरी समझ आ जायेगी वह क्षण धन्य हो जायेगा। आज '18 पाप' को 'पाप' मानना भी कठिन है। पापों को समझना भी कठिन है। सच्ची समझ होने से गुणों में निरन्तर वृद्धि होगी और जीवन में आनन्द की प्राप्ति होगी।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों की मात्र जय-जयकार ही नहीं करें, अपितु उनके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुशरण करेंगे तभी कल्याण होगा। आरंभ-समारंभ करने से जीवों का घमासान होता है। इससे आत्मिक और मानसिक शांति मिलने वाली नहीं है।

साध्वी श्री ऋतुश्रीजी म.सा. ने गीतिका ***''देशनोक नगर में जन्मा एक गुलाब है, सारी दुनिया में ये सबसे लाजवाब है''*** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि पुरुषार्थ और मेहनत करने वाला कभी असफल नहीं हो सकता। सपने देखने चाहिये, लेकिन पुरुषार्थ व हिम्मत पहले होनी चाहिये। संकल्प के धनी खुद भी कार्य करते हैं और दूसरों से भी करवाते हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल सभा में सुशोभित थे।

15 अप्रैल। पौषधशाला में धर्म-ध्यान का अद्भुत ठाठ लगा है। आचार्यदेव के सान्निध्य में प्रातःकालीन प्रार्थना हुई। तत्पश्चात् आचार्यदेव ने अपूर्व कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया। प्रशान्तमना आचार्य भगवन् आदि ठाणा-9 का पौषधशाला, भड़भूजा घाटी से विहार होकर जुहार भवन, भोपालपुरा में पधारना हुआ, जहाँ आचार्य श्री नानेश की प्रथम शिष्या शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले) आदि ठाणा ने आचार्य श्री रामेश के पावन दर्शन कर हर्षानुभूति व्यक्त की एवं अनुपम सेवा, चर्चा का लाभ उठाया।

जुहार भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नवकार महामंत्र के पाँच पदों का प्राण गुण है। पंचपरमेष्ठी नवकार महामंत्र 'व्यक्तिपूजक' नहीं, 'गुणपूजक' है। आत्मा के स्वरूप में कहीं कोई अन्तर नहीं है। सारे सम्प्रदायों के सिद्धान्त एक हैं, पर क्रिया सबकी अलग-अलग है। आगम मूल आधार है। आपस में सद्भाव, प्रेमभाव होना चाहिये। गुणों के प्रति हमारी श्रद्धा-भक्ति होनी चाहिये।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन पर नियंत्रण है तो आप राजा हैं। यदि मन पर नियंत्रण नहीं है तो आप गरीब हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले), साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द सुशोभित थे। स्थानीय महिला मण्डल ने ***''जिनशासन के वीरों को वन्दन है''*** गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। संघ अध्यक्षजी ने महापुरुषों के समागम का अधिकाधिक लाभ उठाने का निवेदन किया। सभी सम्प्रदाय के लोगों ने दर्शन-सेवा का लाभ उठाया। आचार्य भगवन् का जुहार भवन से धर्मनिष्ठ सुश्रावक प्रकाशचन्दजी मोनिनजी सुराणा के न्यू अशोक नगर स्थित निवास स्थान पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा का मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में धर्म जागरण करते हुए पद विहार संभावित है।

दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम जारी हैं।

तपस्या सूची

आजीवन शीलव्रत	प्रकाशचन्दजी मारू-उज्जैन, अतुलजी बाफना-रतलाम, ओमप्रकाशजी स्नेहलताजी बाफना-रतलाम, मयंककुमारजी मीरादेवी डागा, भैरूलालजी आशादेवी जारोली-पलसाना, बरखा अब्भाणी-बीकानेर
पक्की नवकारसी	आजीवन-मनसुखजी गाँधी-रतलाम 100-पुष्पाजी चौरड़िया-खैरागढ़, इंद्राजी डागा-उदयपुर, सरोजजी सहलोत, मंजूजी छाजेड़-बेंगलुरु
पक्की पोरसी	100- शिरोमणिजी कोठारी-रतलाम, वीरमाता कस्तूरीदेवी गुलगुलिया-बीकानेर 200 डेढ़ पोरसी- सोहनबाई सिंघवी-नीमच
वर्षीतप	कान्ताबाई सेठिया-भीनासर
गाथा का स्वाध्याय	2 लाख- इन्द्राजी धाड़ीवाल-रायपुर 1 लाख- मनीषाजी मुकिम-रायपुर, पुष्पाजी सुराना 100- चन्द्रकलाजी भूरा, कनकदेवी बच्छावत, नीलमजी कोचर-बीकानेर

अक्षय तृतीया पारणा हेतु उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. का चित्तौड़गढ़ में मंगल प्रवेश

चित्तौड़गढ़। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में अपूर्व धर्म प्रभावना करते हुए चित्तौड़गढ़ में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग हेतु पधारना हो गया है।

03 अप्रैल। आचार्य श्री नानेश की जन्मस्थली दाँता ग्राम में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 के पधारने से अद्भुत धर्म जागृति हुई। आपश्रीजी ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि ''**तुम सुखी बनो। सुखी बनना तुम्हारे ही हाथ में है। सुख पराधीन नहीं, स्वाधीन है। प्रभु ने सिर्फ शब्दों से नहीं, अपने जीवन से बहुत कुछ सिखाया है। जैसी दशा आज हमारी है, वैसी ही दशा प्रभु महावीर की भी रही है। संस्कार बहुत कुछ होते हैं, पर संस्कार में भी पुरुषार्थ आवश्यक है। भोग की दिशा में आगे मत बढ़ो। ये दुःख का रास्ता है। योग की दिशा में आगे बढ़ो, क्योंकि ये ही सुख का रास्ता है। भक्त बनाने के लिए भगवान ने कभी असत्य का रास्ता नहीं पकड़ा। भगवान के लगभग 1,59,000 श्रावक थे और गौशालक के 11 लाख भक्त थे। गौशालक अष्टांग निमित्त का प्रयोग करता था।**

वत्स! क्षमा रखना।

वत्स! त्याग की भावना रखना।

वत्स! संसार के भोगों में डूब मत जाना।

वत्स! तुम सुखी बनो।

भोग के मार्ग को अपनाकर नहीं योग को अपनाकर। हमारा धर्म भोग का नहीं त्याग का धर्म है। हम भोग को नहीं, त्याग को अधिक महत्त्व दें।''

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने भी उद्बोधन फरमाया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। प्रतिमाह एक आयम्बिल करने का नियम कई लोगों ने लिया। उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का आगे कपासन, चित्तौड़गढ़ की ओर विहार संभावित है।

04 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का कपासन में मंगल प्रवेश हुआ। आपश्रीजी ने प्रवचन के माध्यम से भक्तों के भगवान महावीर की अमृतवाणी का पान कराते हुए फरमाया कि ''**संघ का संचालन राम भरोसे डण्डे या सख्ती से नहीं होता, अपितु श्रद्धा व समर्पणा से होता है। भगवान ने कभी यह नहीं कहा कि यह करो, यह न करो। भगवान सिर्फ जीवन बदलने का कहते हैं। दुःख को दूर करने में बाधक दुःख की जड़ को जब तक हम नहीं जानेंगे तब तक हम दुःख को दूर नहीं कर पाएँगे। अतः यह करते ही जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त होना ही सच्चा सुख है।**''

05 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने कपासन में फरमाया कि ''**कमल कीचड़ से जितना ऊपर उठता है, उतना निर्मल, स्वच्छ, निर्लेप होता है। यह अवसर अपने भीतर को शिक्षा देने का है। जिन बातों से अपना कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें सुनना और बोलना बंद कर देना चाहिये। सच्ची भक्ति यही है कि गुरु के उपदेशों को आत्मसात् करें। हम बाहर से क्या कर रहे हैं, इससे कुछ नहीं होना है। हम भीतर से क्या कर रहे हैं, वही हमारी जीवन की दिशा निर्धारित करता है।**''

श्री राजनमुनिजी म.सा. के हृदयस्पर्शी उद्‌बोधन पश्चात् विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

06 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने कपासन में अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि ''**हमें अपनी समझ एवं दुनिया को देखने का नजरिया बदलना होगा। हमारे साथ क्या-क्या घटनाएँ होती हैं, हमारे साथ कैसा व्यवहार होता है, इससे हमारी जिन्दगी नहीं बदलती। हमारी समझ में जो सोचने की शक्ति है, उससे जीवन रास्ता पकड़ता है। अपने आपको खराब समझना, दूसरों को खराब समझने से ज्यादा अच्छा है। जो व्यक्ति अपनी गलती को समझकर सुधार करने का प्रयास करेगा वही सही विकसित होगा।**''

07 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का अक्षय तृतीया पारणा प्रसंग के लिए चित्तौड़गढ़ की तरफ निरंतर विहार हो रहा है। केसरखेड़ी से जैन स्थानक सिंहपुर को पावन करते हुए जैन स्थानक नारेला में आपश्रीजी का मंगल पदार्पण हुआ। धर्म की अद्‌भुत जागरणा हो रही है। हर माह एक आयंबिल करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

09 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चित्तौड़गढ़ में भव्यातिभव्य मंगल प्रवेश अपूर्व शान्तिपूर्ण धार्मिक माहौल में हुआ।

15 अप्रैल। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का उपनगरों में प्रभावी विचरण करते हुए चित्तौड़गढ़ में सादगीपूर्ण प्रवेश हुआ। रामराज की पावन छाँव में हर जन अध्यात्म रस से आप्लावित हो रहा है।

– महेश नाहटा

KnG द्वारा महावीर जन्मकल्याणक पर कार्यक्रम आयोजित

रविवार 2 अप्रैल 2023 को KnG Exclusive Jain Pathshala में अविस्मरणीय महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें 50 से अधिक बच्चे ऑनलाइन जुड़े तथा मुम्बई, भीलवाड़ा, रायपुर, जयपुर एवं धुले के बच्चों ने ऑफलाइन इस महोत्सव में भागीदारी की। प्रारंभ में त्रिशला माता द्वारा देखे गए 14 स्वप्नों का दिग्दर्शन कराया गया। चैत्र सुदी तेरस की शुभ रात्रि में हुए प्रभु के जन्मकल्याणक को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने मिलकर भगवान महावीर जन्मकल्याणक स्पेशल गीत का शानदार प्रदर्शन किया।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक की थीम ''**स्वाध्याय तप**'' रखी गयी, जिसमें कैसे हम अपने कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं? जब हम हमारा जन्मदिन मनाते हैं तब कर्मों का बंध ज्यादा होता है, लेकिन जब हम तीर्थंकर का जन्मकल्याणक मनाते हैं तब कर्मनिर्जरा का अवसर उपस्थित होता है आदि के बारे में समझाया गया।

प्रभु महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक से लेकर निर्वाण कल्याणक तक बच्चों को स्वाध्याय तप से जुड़कर प्रभु वीर की वाणी और वचन को कंठस्थ एवं हृदयस्थ करने का प्रयास करने के लिए बच्चों को तीन ऑप्शन में से किसी एक ऑप्शन को सेलेक्ट कर स्वाध्याय तप फॉर्म भरने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

अंत में Take Home Activity के अन्तर्गत **'HIS PREACHING, MY LEARNING'** विषय पर एक बुकमार्क बनाया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों को उनका नाम लिखा उपहार दिया गया।

अगर आप भी हमारे साथ जुड़ना चाहते हैं तो मो.नं. 9699880735 पर संपर्क करें।

-Know & Grow Exclusive Team

विविध समाचार

मेवाड़ अंचल

उदयपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में 29 मार्च से 6 अप्रैल तक आयोजित आयंबिल ओलीजी तप में लगभग 125 आयम्बिल एवं नींवी की तपस्या भाई-बहिनों ने की।

साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि ठाणा का 29 से 31 मार्च तक संस्थान में विराजना हुआ। प्रवचन में आपश्रीजी ने श्रीपाल चरित्र का वांचन किया। 1 से 8 अप्रैल तक साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में साध्वी श्री ललिताश्रीजी म.सा. ने श्रीपाल चरित्र का वांचन किया।

3 अप्रैल को महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रात: सामूहिक सामायिक आराधना में लगभग 300 भाई-बहिनों ने लाभ लिया। साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञाजी म.सा. ने भजन के माध्यम से महावीर स्वामी के गुणों की अभिव्यक्ति दी। शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. ने महावीर स्वामी के नाम के अक्षरों की व्याख्या प्रस्तुत की।

5 अप्रैल को आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस पर उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामना की।

-देवेन्द्रकुमार धींग

बीकानेर-मारवाड़ अंचल

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्मकल्याणक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: प्रभातफेरी जैन जवाहर मण्डल से प्रारंभ होकर अनेक मुख्य मार्गों से होते हुए पुन: जैन जवाहर मण्डल में पहुँची। भगवान महावीर के संदेशों एवं जय-जयकार से सम्पूर्ण क्षेत्र गूँज उठा।

यहाँ आयोजित प्रवचन सभा में साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा. ने भगवान महावीर के अनेकान्तवाद की विशेषताओं का विवेचन किया। साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. ने भगवान महावीर के चार सिद्धान्तों पर मार्मिक प्रवचन फरमाया। गद्य-पद्य में श्रावक-श्राविकाओं ने गुणानुवाद किया। तत्पश्चात् 5-5 सामायिक, 75 संवर एवं 80 सामूहिक एकासन के प्रत्याख्यान हुए। भगवान महावीर एवं आचार्य श्री रामेश पर आधारित प्रतियोगिता करवायी गयी। रात्रि में बहिनों की अंताक्षरी एवं वक्तृत्व कला पर प्रतियोगिता हुई।

आचार्य श्री रामेश का 71वाँ जन्मदिवस जैन जवाहर मण्डल में शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. के पावन सान्निध्य में तप-त्याग एवं गुणगानपूर्वक मनाया गया। साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा ने. फरमाया कि हमें आज्ञा का पालन करना चाहिए। गुरु के इंगित इशारों को समझेंगे तभी जीवन में आगे बढ़ पाएँगे।

साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य के पास 4 बल होते हैं- आस्था बल, श्रद्धा बल, आत्मबल एवं आगमबल। चक्रवर्ती के अंदर इतनी शक्ति नहीं कि वह दूसरा चक्रवर्ती तैयार कर सके। धर्मदेव के पास इतनी शक्ति है कि वे अनेक धर्मदेव तैयार कर सकते हैं।

अनेक वक्ताओं ने अपने भावों द्वारा गुरु गुणगान किया। आज के विशेष अवसर पर 85 सामूहिक एकासन, 75 संवर का आयोजन हुआ। विजयकुमारजी सांड के 23 उपवास की तपस्या थी। **-आशीष बुच्चा**

गंगाशहर-भीनासर। भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर प्रार्थना, शोभायात्रा, प्रवचन, सामूहिक

एकासन, आयम्बिल, उपवास, 5-5 सामायिक की सामूहिक आराधना आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। श्री जवाहर विद्यापीठ में शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा. ने बीकानेर से पधारकर दो दिन जिनवाणी का पान करवाया। आपश्रीजी ने फरमाया कि महावीर जयन्ती आचार्यश्रीजी के निर्देशानुसार मनानी चाहिए। कभी भी हिंसा करनी नहीं और हिंसा सहनी भी नहीं। श्री जयेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रभु अनन्त ज्ञान-दर्शन के धारक थे।

साध्वी श्री सिद्धिश्रीजी म.सा. ने प्रभु की दीपक से तुलना करते हुए सम्यक् पुरुषार्थ एवं जिनवाणी का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री लक्ष्यज्योतिजी म.सा. ने गद्य-पद्य में भाव रखे।

आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर 5 अप्रैल को सुराणा मोहल्ला में शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. ने आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त विभिन्न आयामों को सफल बनाने का आह्वान किया। श्री मंगलमुनिजी म.सा. ने भजन, साध्वी श्री निशान्तश्रीजी म.सा. ने आचार्य की सम्पदा पर विवेचन फरमाया। महत्तम महोत्सव के स्थानीय संयोजक ने प्रत्येक आयाम को अन्तर्मन से ग्रहण करने एवं उसे पूरा करने का आह्वान किया।

चौपड़ा बाड़ी में शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सा. के सुसान्निध्य में भगवान महावीर जन्मकल्याण एवं आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर 108 घंटे का जाप हुआ, जिसमें कुल 571 घंटे जाप हुआ। साथ ही 9 दिन आयम्बिल की लड़ी में 15 आयंबिल तप एवं प्रचुर मात्रा में एकासन हुए। साध्वीश्रीजी पटवा निवास, भीनासर में विराज रहे हैं।

-विमलकुमार सेठिया, लूणकरण सुराणा

पाली। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, पाली के तत्वावधान में दो दिवसीय समीक्षण ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योग शिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने शारीरिक स्वस्थता हेतु अनेक प्रकार के योगों का अभ्यास करवाया। मानसिक स्वास्थ्य के लिए श्वास प्राणायाम की विधि करवायी गयी। इस अवसर पर अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

-डॉ. सत्यनारायण शर्मा

जयपुर-ब्यावर अंचल

ब्यावर। शासन दीपक श्री लाघवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में धर्म-ध्यान, त्याग-तप हुए। आपश्रीजी ने धर्मसभा में फरमाया कि धर्म में दिखावा मोक्ष की गति को धीमा कर देता है। धर्म दिखावे के लिए नहीं अपितु आत्मशुद्धि के लिए करना चाहिए।

श्री यत्नेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अनादिकाल से भगवान की देशना सुनकर उनकी वाणी के अनुसार कई भव्यात्माओं ने अपना लक्ष्य प्राप्त किया है। जिनेश्वर भगवान द्वारा कहा गया धर्म सत्य होता है।

समता भवन में प्रतिदिन सायंकालीन प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रहती है। रविवार को युवाओं हेतु विशेष प्रवचन हुआ, जिसमें चारित्रात्माओं ने फरमाया कि बिना झुके मोक्ष संभव नहीं है। महापुरुषों एवं माता-पिता के चरणों में झुकने से ऊँचाइयाँ प्राप्त होती हैं।

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक दिवस से एक दिन पूर्व शासन दीपक श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि कल प्रात: उठते ही हमें प्रण करना है कि मैं भी महावीर बनूँ। हमें महावीर से मन का रिश्ता बनाना है। आपश्रीजी ने भजन ***'प्रभु हमारा तारणहारा, चौबीसवाँ अवतारा प्रभु हमारा'*** प्रस्तुत कर 'जीओ और जीने दो' का संदेश दिया।

श्री यत्नेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में मर्यादा जरूरी है। साध्वी श्री प्रेक्षाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि संघ, समाज में वही आगे रहता है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर भरी हो।

शासन दीपक श्री हिमांशुमुनिजी म.सा. ने समता भवन में फरमाया कि कब तक हम अपनी आत्मा को

धोखा देते रहेंगे ? धर्म को जानने-समझने का प्रयत्न करें। हमें अपनी आत्मा को प्रकट करने का गोल्डन चान्स मिला है। इसका सदुपयोग करें।

श्री राजरत्नमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध की विभिन्न परिस्थितियाँ बार-बार हमारे सामने आती रहेंगी, लेकिन हमें समभाव मे रहना है। शांत रहकर मोक्ष में जा सकते हैं।

समीक्षण ध्यान शिविर - आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर के प्रशिक्षक सत्यनारायणजी शर्मा के सान्निध्य एवं समता महिला मंडल के तत्वावधान में तीन दिवसीय समीक्षण ध्यान शिविर का आयोजन 20 से 22 मार्च तक जवाहर भवन में किया गया। शिविर में सकल जैन समाज ने भाग लेकर इसे सफल बनाया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं जैन मित्र मंडल का वार्षिक अधिवेशन व चुनाव नानेश रत्नम् जवाहर भवन में सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष विनयचंदजी रांका बने। सभी ने रांकाजी को बधाई दी। संघ में उत्साह व उमंग का माहौल रहा।

-नोरतमल बाबेल, सत्यनारायण शर्मा

कोटा। भगवान महावीर जन्मकल्याणक का पावन प्रसंग समता भवन में धर्माराधना एवं प्रभु महावीर के गुणगान के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। आचार्य श्री रामेश के 71वें अवतरण दिवस पर नवकार महामंत्र जाप के बाद मंगलाचरण, रामेश चालीसा सहित अनेक जनों ने गुणगान किया। **-महेन्द्र कांकरिया**

सवाईमाधोपुर। परमाराध्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के 71वें जन्मदिवस पर स्थानीय संघ सदस्यों ने रामेश चालीसा का सामूहिक पाठ कर आचार्यदेव के विराट व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। समता महिला मण्डल की बहिनों ने भजनों की प्रस्तुति एवं युवा संघ ने आचार्यदेव के विविध आयामों की जानकारी दी। सभी सदस्यों ने 2-2 सामायिक की आराधना की।

-बाबूलाल सर्राफ

मालवा अंचल

बखतगढ़। व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के 71वें जन्मदिवस पर 5 अप्रैल को श्री वर्धमान स्थानक भवन में नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। रामेश चालीसा एवं गुरु गुणगान कर आचार्यश्रीजी के उत्कृष्ट संयम जीवन की अनुमोदना एवं मंगलकामना की गई। **-दिलीप दरड़ा**

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

बालोद। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' के उपलक्ष्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ के संयोजन में महावीर जैन भवन में नि:शुल्क मेगा स्वास्थ्य परामर्श एवं नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में हाईटेक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के विविध विभागों के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने सेवाएँ प्रदान कीं एवं मरीजों को नि:शुल्क दवाइयाँ उपलब्ध करवायी गयी। इस शिविर से दो दिन पूर्व रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर को सफल बनाने में सकल जैन श्रीसंघ, साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारीगण, लाभार्थी परिवार, हाईटेक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, भिलाई की टीम, जिला चिकित्सालय के नर्सिंग स्टाफ एवं स्थानीय गुरुभक्तों का बहुमूल्य योगदान रहा।

-सुनील ललवानी

भिलाई। शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणिजी म.सा. आदि ठाणा का भिलाई के विभिन्न उपनगरों में ऐतिहासिक विचरण हुआ। विचरण क्षेत्र के निवासियों ने साध्वीवर्याओं के सान्निध्य का धर्म-ध्यान, त्याग-तप करके भरपूर लाभ उठाया। **-वीरेन्द्र पुगलिया**

खरियार रोड़। आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर सामूहिक प्रार्थना, रामेश चालीसा पाठ एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। जरूरतमंदों को अन्न प्रसादी के रूप में भोजन का वितरण किया गया। कार्यक्रम में अनेक प्रमुखजनों की उपस्थिति रही। **-विकास जैन**

कर्नाटक-आन्ध्रप्रदेश अंचल

डबीरपुरा। शासन दीपक श्री विदेहमुनिजी म.सा., श्री उत्तमयशमुनिजी म.सा. ठाणा 2 का मंगल प्रवेश 1 अप्रैल को जैन स्थानक में हुआ। आपश्रीजी के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, धार्मिक चर्चा, प्रतिक्रमण एवं अन्य धार्मिक क्रियाएँ निरंतर चली।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत 2 अप्रैल को स्थानक भवन में 'The Joy Of Minimalistic Living' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गयी। महावीर जयंती के दिन संतवृंद ने प्रवचनों के माध्यम से प्रभु महावीर की जीवनी व उनको आये उपसर्ग आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

आचार्य श्री रामेश का जन्मदिवस दो-दो सामायिक सहित मनाया गया। चारित्रात्माओं ने फरमाया कि आचार्य श्री रामेश का जन्मदिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम कम से कम उनके किसी एक गुण को अपने जीवन में अपनाएँगे।

-विकास पितलिया

विशाखापट्टनम्। शासनपति भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संतोषजी बुच्चा के निवास पर नवकार महामंत्र जाप का आयोजन किया गया। जाप के पश्चात् सिंहाचल्म देव स्थानम की गौशाला में गायों को हरी घास खिलायी गयी।

इसी क्रम में वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. के जन्मदिवस पर अबीरचन्दजी गेलड़ा के निवास पर सामूहिक नवकार महामंत्र का जाप हुआ। इस विशेष अवसर पर के.जी.एच. हॉस्पिटल में भोजन वितरण किया गया। दोनों कार्यक्रमों में गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। **-अशोक लुणावत**

तमिलनाडु अंचल

कोयम्बटूर। आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के 71वें जन्मदिवस पर 05 अप्रैल को स्थानीय संघ द्वारा पक्षियों को आजाद करवाया गया। जीवदया के इस कार्य में संघ की तीनों शाखाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। **-दिनेशकुमार जैन**

तण्डियारपेट। श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस पर श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में गुरुभक्तों द्वारा गद्य-पद्य में महापुरुषों के गुणगान किये गये। उपस्थिति सराहनीय रही। **-मांगीलाल छल्लाणी**

मुम्बई-गुजरात अंचल

नवी मुम्बई। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल एवं समता युवा संघ का गठन किया गया, जिसका शपथ ग्रहण समारोह 12 मार्च को हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्रात: रविवारीय समता शाखा एवं सामूहिक सामायिक पश्चात् नवकार महामंत्र जाप व मंगलाचरण से हुई। समारोह अतिथि के रूप में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, मुम्बई-गुजरात अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी, श्री साधुमार्गी जैन संघ-मुम्बई के अध्यक्ष, मंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सहित अनेक गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने नवमनोनीत स्थानीय संघ अध्यक्ष दिलीपजी भण्डारी, महामंत्री प्रकाशजी आँचलिया, उपाध्यक्ष वर्धमानजी मेहता, कोषाध्यक्ष प्रवीणकुमारजी डांगी; समता महिला मण्डल अध्यक्षा मधुबालाजी बोहरा, मंत्री मीनाक्षीजी कावड़िया, कोषाध्यक्षा जागृतिजी जारोली; समता युवा संघ अध्यक्ष नरेशजी सूर्या, महामंत्री धीरजजी चौरड़िया, कोषाध्यक्ष विजेशजी नाहर को शपथ ग्रहण करवायी।

इस अवसर पर नवी मुम्बई समता भवन निर्माण के लिए दानदाताओं ने प्रभुत सहयोग राशि की घोषणा की। नवमनोनीत अध्यक्षजी ने वर्ष 2026 तक समता भवन निर्माण पूर्ण करवाने के भाव रखे।

शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की प्रेरणा से खारघर, वाशी, अलीबाग सहित नवी मुम्बई क्षेत्र में सामूहिक सामायिक, समता शाखा, समता संस्कार पाठशाला में धर्माराधना जारी है। नवी मुम्बई संघ में महत्तम महोत्सव में 40 श्रावक-श्राविकाएँ एवं बच्चे प्रतिक्रमण याद कर रहे हैं। **-नरेश सूर्या**

महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल

बुलढ़ाणा। शासन दीपक श्री पद्ममुनिजी म.सा., श्री उदितमुनिजी म.सा., श्री छत्रांकमुनिजी म.सा., श्री निर्वाणमुनिजी म.सा., श्री प्रणतमुनिजी म.सा. एवं श्री सौरभमुनिजी म.सा. का 18 से 20 मार्च के मध्य पदार्पण हुआ। अलग-अलग क्षेत्रों में विचरण करते हुए संतरत्नों का भावपूर्ण मिलन अविस्मरणीय हो गया। श्री पद्ममुनिजी म.सा. एवं श्री सौरभमुनिजी म.सा. आदि संतों का सान्निध्य 8 अप्रैल तक मिला। अन्य संतरत्नों का उदयपुर एवं जलगाँव की दिशा में विहार हुआ है। संतवृंद के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्मकल्याणक, आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस सहित विभिन्न धार्मिक आयोजनों का लाभ प्राप्त हुआ। भगवान महावीर जन्मकल्याणक से पूर्व '**ये हैं महावीर हमारे**' व्याख्यानमाला की प्रभावना श्री सौरभमुनिजी म.सा. द्वारा की गयी। दोपहर में श्राविकाओं की कक्षा में बहिनों ने एवं शाम को प्रतिक्रमण व धर्मचर्चा में श्रावकों, विशेषकर नवयुवकों ने लाभ लिया।

श्री पद्ममुनिजी म.सा. की प्रेरणा से 450 एकासन एवं उपवास हुए। इस दौरान आयम्बिल, नींवी का तेला, सामायिक का बेला, प्रतिक्रमण, संवर का लाभ लोगों ने लिया। **-राजेश देशलहरा**

मुक्ताईनगर। शासन दीपक श्री उदितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-9 के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस मनाया गया। चारित्रात्माओं ने धर्म का महत्त्व बताते हुए नॉनवेज होटल में जाने का त्याग करवाया। इस अवसर पर गद्य-पद्य में गुरु गुणगान एवं पाठशाला के बच्चों द्वारा नाटक आदि की प्रस्तुति दी गई।

-राखी अलिझाड़

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान अंचल

जनकपुरधाम (नेपाल)। 3 अप्रैल को भगवान महावीर स्वामी का जन्मदिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक सामायिक एवं नवकार महामंत्र जाप किया गया। उपवास, एकासना आदि तप सभी परिवारों में हुए। 'मानव सेवा आश्रम' में असहाय 40 लोगों को भोजन कराया गया एवं खाद्यान्न सामग्री का वितरण किया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर के जीवन के कुछ प्रसंग प्रस्तुत किये गये।

-भैरुदान गोलछा

बगोमुंडा। शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. एवं श्री दिनेशमुनिजी म.सा. ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में 5 अप्रैल को आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस त्याग-तपस्या के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मण्डल द्वारा गीतिका से किया गया। वक्ताओं ने व्यनसमुक्ति, उत्क्रांति सहित आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विविध आयामों की विवेचना की।

श्री अक्षयमुनिजी म.सा. ने अपने उद्गार में फरमाया कि इस पंचमकाल में उत्कृष्ट क्रियाधारी आचार्य श्री रामेश द्वारा संघ को नेतृत्व प्रदान करना हम सभी के लिए गौरव एवं सौभाग्य की बात है। कार्यक्रम में आस-पास के अनेक संघों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उपस्थित होकर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

-रतन जैन, केसिंगा

रामपुरहाट। भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याण एवं आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस सामूहिक सामायिक आराधना के साथ मनाया गया। जन्मकल्याणक पर महावीर सत्संग भवन में भगवान महावीर के जीवन पर

आधारित प्रश्नोत्तरी, गुणानुवाद एवं त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर सामूहिक सामायिक, रामेश चालीसा, गुणानुवाद, प्रश्नोत्तर आदि सहित आचार्य प्रवर के संयमी दीर्घायु जीवन की मंगलकामना की गयी। समता महिला समिति द्वारा लगभग 60 विकलांगों को भोजन, फल, मिठाई आदि वितरित किये गये। **-सुशील बांठिया**

कोलकाता समता भवन का लोकार्पण

श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता के नवीन समता भवन का लोकार्पण 09 अप्रैल 2023 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सर्वप्रथम नवकार महामंत्र एवं राम चालीसा का सामूहिक जाप किया गया। तत्पश्चात् पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री सरदारमलजी कांकरिया एवं संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी द्वारा बहुप्रतिक्षित समता भवन का लोकार्पण सम्पन्न हुआ।

श्री राजेन्द्रजी कोठारी ने सभी द्वारा तन-मन-धन से योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित कर स्वागत किया। समता युवा संघ के सदस्यों द्वारा पीपीटी के माध्यम से 2007 से 2023 तक की संघ यात्रा प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् एवं चारित्रात्माओं द्वारा 2008 में चातुर्मास की घोषणा के बाद आये परीषहों को दर्शाया गया। साथ ही संघ की तीनों इकाइयों द्वारा इस दौरान किये गये सेवा कार्यों को प्रस्तुत किया।

संघ द्वारा श्रीमती कंचनदेवी कांकरिया, श्रीमती कविता विशाल बरड़िया, शान्तिलालजी डागा, सरदारमलजी कांकरिया एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता के पूर्व अध्यक्षों का उनके द्वारा ज्ञान, तप और सेवा में योगदान के लिए सम्मान किया गया। कार्यक्रम में संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, समता युवा संघ के राष्ट्रीय महामंत्री सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

इससे एक दिवस पूर्व 8 अप्रैल को कोलकाता-हावड़ा-हिन्दमोटर संघों की सामूहिक बैठक का आयोजन किया। जिसमें श्वेता बच्छावत ने संघ के प्रति अहोभाव कैसे बढ़े विषय पर ''संघ न होता हम क्या होते'' विषयक प्रस्तुति दी। संघ को तीनों इकाइयों ने इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाकर केन्द्रीय पदाधिकारियों द्वारा प्रदत्त विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। **-राकेश बुच्चा**

पूर्वोत्तर अंचल

सिलचर। प्रात: स्मरणीय आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस सामायिक, प्रार्थना, भजन, रामेश चालीसा व गुणानुवाद के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

संघ अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने आचार्यदेव का गुणानुवाद किया। संघ, महिला समिति एवं युवा संघ के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

-विजयकुमार सांड

गुवाहाटी। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में 3 अप्रैल को श्रमण भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक दिवस एवं 5 अप्रैल को आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस त्याग-तप, धर्माराधना के साथ संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ सदस्यों की उपस्थिति में मनाया गया।

महावीर जयन्ती पर प्रात:कालीन सामूहिक सामायिक आराधना के पश्चात् सभी सदस्यों ने सकल जैन समाज द्वारा आयोजित शोभायात्रा में भाग लिया, जिसे आसाम के महामहिम राज्यपाल गुलाबचन्दजी कटारिया ने ध्वज दिखाकर रवाना किया।

आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस पर सामूहिक सामायिक में उपस्थित सभी सदस्यों ने भजनों एवं रामेश चालीसा सहित गुणानुवाद करते हुए आचार्यदेव के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की मंगलकामना की। संघ की ओर से सामूहिक एकासन एवं आयम्बिल का आयोजन किया गया। **-राजेन्द्र दस्साणी**

सिलीगुड़ी। भगवान महावीर जन्मकल्याणक से एक दिवस पूर्व स्थानीय समता भवन में सामूहिक नवकार

महामंत्र जाप, समता शाखा एवं भजन आदि के माध्यम से गुणगान किया गया। 3 अप्रैल को जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर सामूहिक झाँकियों के साथ नगर परिक्रमा कार्यक्रम जयनादों के साथ सम्पन्न हुआ।

5 अप्रैल को आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस पर समता भवन में नवकार महामंत्र जाप सहित जीवदया के अन्तर्गत पक्षियों के लिए दाना व जल तथा असहाय जरूरतमंदों के लिए भोजन एवं विश्राम की व्यवस्था की गयी।

–किरण भूरा

दिल्ली-पंजाब-हरियाणा अंचल

दिल्ली। श्री साधुमार्गी जैन संघ के नवीन समता भवन का भूमि पूजन एवं शिलान्यास संरक्षक रिखबचंदजी बैद के करकमलों से सम्पन्न हुआ। नवकार महामंत्र एवं नानेश-रामेश चालीसा के सामूहिक उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। संघ प्रमुखों द्वारा जैसे ही नींव में शिलाएँ रखी गयी वैसे ही पूरा वातावरण जय गुरु नाना, जय गुरु राम के जयघोषों से गूँज उठा। आज के कार्यक्रम में दिल्ली संघ के अध्यक्षजी, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, भवन निर्माण समिति संयोजक सहित स्थानीय संघ प्रमुखों एवं अनेक उपनगरों से पधारे श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही।

–कविन्द्र छाजेड़

देवनागरी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला :

जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं आगम, अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में '**सप्तदिवसीय पाण्डुलिपि-पठन कार्यशाला**' का आयोजन 11 से 17 मार्च तक आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र के पुस्तकालय में किया गया। प्राचीन देवनागरी लिपि का अभ्यास लिपि विषय विशेषज्ञ सुश्री मानसीजी धाड़ीवाल, रायपुर द्वारा करवाया गया, साथ ही अन्य पाण्डुलिपि प्रोफेसर विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यशाला समापन पर प्रो. जिनेन्द्रकुमारजी जैन ने कहा कि पाण्डुलिपियों में अपार ज्ञान-सम्पदा भरी हुई है, जिनके अध्ययन से भारतीय संस्कृति के ज्ञान-वैभव की जानकारी प्राप्त होती है। अन्य अनेक वक्ताओं ने अपने भाव रखे। कार्यशाला में पाण्डुलिपियों का अध्ययन-अनुसंधान करने वाले अनेक शोधार्थी-विद्यार्थियों ने सहभागिता की। अंत में मानसीजी धाड़ीवाल का पगड़ी, माला, उपरणा पहनाकर सम्मान किया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

–डॉ. सत्यनारायण शर्मा

कठोरता नहीं होती हर इन्कार

एक नदी के किनारे दो पेड़ थे। उस रास्ते से एक छोटी-सी चिड़िया गुजरी और पहले पेड़ से पूछा- ''बारिश होने वाली है, क्या मैं और मेरे बच्चे तुम्हारी टहनी में घोंसला बनाकर रह सकते हैं?'' इस पर पेड़ ने मना कर दिया। फिर वो दूसरे पेड़ के पास गयी और वही सवाल पूछा। उसने हाँ कहा और चिड़िया अपने बच्चों के साथ खुशी से दूसरे पेड़ में घोंसला बनाकर रहने लगी।

एक दिन इतनी अधिक बारिश हुई कि उसी समय पहला पेड़ जड़ सहित उखड़ कर पानी में बह गया। जब चिड़िया ने उस पेड़ को बहते हुए देखा तो कहा- ''जब मैं और मेरे बच्चे तुमसे शरण मांगने के लिए आये, तब तुमने मना कर दिया था, अब देखो तुम्हारे उसी रूखे बर्ताव की सजा मिल रही है। जिसका उत्तर पेड़ ने मुस्कुराते हुए दिया- ''मैं जानता था कि मेरी जड़ें कमजोर हैं और इस बारिश में मैं टिक नहीं पाऊँगा, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था। मना करने के लिए मुझे माफ कर देना।'' और यह कहते हुए पेड़ बह गया।

किसी के इन्कार को हमेशा उनकी कठोरता न समझें। क्या पता उसके इसी इन्कार से आपका भला हो जाए। कौन किस परिस्थिति में है शायद हम यह नहीं समझ पाएँ।

महत्तम महोत्सव : मेरा महोत्सव

(स्थायी सामाजिक सेवा प्रकल्प)

समता समग्र आरोग्यम् फिजियोथैरेपी सेन्टर का भव्य उद्घाटन

बीकानेर, 16 अप्रैल 2023। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के सेवा प्रकल्पों में रविवार को एक नया स्वर्णिम अध्याय और जुड़ गया, जब संघनायक आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव '**महत्तम महोत्सव**' के अंतर्गत समता समग्र आरोग्यम् फिजियोथैरेपी सेंटर का शुभारंभ नोखा रोड़, आचार्य श्री नानेश मार्ग स्थित केन्द्रीय कार्यालय समता भवन के ग्राउण्ड फ्लोर में हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मण्डल की बहिनों द्वारा '**नवकार मंत्र है प्यारा.....**' गीत के साथ किया गया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि वर्तमान आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. सहित पूर्वाचार्यों एवं अनेकानेक महापुरुषों का हम पर बहुत ऋण है। उनके ऋण से उऋण हो पाना असंभव है। ऐसे ही विशिष्ट महापुरुष श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव को हम '**महत्तम महोत्सव**' के रूप में मना रहे हैं।

फिजियोथैरेपी सेंटर के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से महत्तम महोत्सव के 9 बिन्दुओं में से स्थायी सामाजिक सेवा प्रकल्प के अंतर्गत यह विशिष्ट कार्य समता मनीषी स्व. श्री सोहनलालजी सिपानी की पुण्यस्मृति में श्रीमती जेठीदेवी, श्रीमती कुमुददेवी, श्रीमती श्रद्धा सिपानी, बेंगलुरु/उदयरामसर के सहयोग से संघ को समर्पित कर उन्हीं द्वारा संचालन किया जा रहा है। स्व. श्री सोहनलालजी सिपानी के परिवार, विशेष रूप से श्री विमलजी सिपानी की सेवा के प्रति सोच से एक सपने के साकार होने जैसा कार्य आज यहाँ पर हुआ है। इस स्वप्न के साकार होने और फिजियोथैरेपी सेन्टर को मूर्त्तरूप में लाने में गीताजंली हॉस्पिटल के डॉ. पल्लव भटनागर (फिजियोथैरेपिस्ट), उदयपुर (HOD) तथा आशीषजी जैन, बेंगलुरु के साथ-साथ सुरेशजी बच्छावत की अनुपम सेवाएँ रहीं। यह फिजियोथैरेपी सेंटर गरीब, कमजोर, असहाय, मध्यमवर्गीय हो या उच्चवर्गीय, सभी के लिए उपयोगी साबित होने वाला है।

उन्होंने आगे बताया कि इस फिजियोथैरेपी सेन्टर का संचालन डॉ. नेहा जैन (न्यूरो) द्वारा डॉ. पल्लव भटनागर (फिजियोथैरेपिस्ट) तथा डॉ. आशीष जैन (फिजियोथैरेपिस्ट) के निर्देशन में किया जाएगा। मैं श्री संघ की और से डॉ. पल्लव और डॉ. आशीष जैन का

आभार ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस फिजियोथैरेपी सेन्टर हेतु अपनी बहुमूल्य सेवाएँ समर्पित भाव से प्रदान करने हेतु सहमति प्रदान की।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में डॉ. पल्लव भटनागर एवं उनकी टीम ने पीपीटी प्रजेन्टेशन द्वारा प्रायोगिक रूप से फिजियोथैरेपी सेंटर में स्थापित मशीनों की विशेषताओं से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराते हुए बताया कि मरीज की किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि का पता लगाने के लिए इन विश्वस्तरीय मशीनों को यहाँ स्थापित किया गया है। इससे असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को अकल्पनीय लाभ मिलने वाला है। आपने उपस्थितजनों को श्रेष्ठतम ईलाज का भरोसा दिलाया।

कार्यक्रम में उद्घाटनकर्ता सहित सभी डॉक्टर्स एवं सम्मानितजनों का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम संचालन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, शिखर सदस्य, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मंत्री सहित बीकानेर, गंगाशहर-भीनासर के पदाधिकारी व सदस्य एवं देश के अनेक स्थानों से पधारे गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन संघ समर्पणा गीत के साथ हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

आनंदकँवर, तारादेवी, चम्पालाल बांठिया स्मृति प्याऊ का शुभारंभ

बीकानेर, 16 अप्रैल 2023। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव-मेरा महोत्सव' के '**स्थाई सामाजिक सेवा**' के अंतर्गत एक और अभिनव प्रकल्प के रूप में आनंदकँवर, तारादेवी, चम्पालाल बांठिया स्मृति प्याऊ (अंतर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ) का शुभारंभ स्व. चम्पालालजी बांठिया परिवार की ओर से श्री सुमतिलालजी बांठिया के करकमलों से सम्पन्न हुआ। उदारमना, दानवीर, सुश्रावक स्व. श्री शांतिलालजी बांठिया द्वारा आनन्द सागर, चित्रा आईस फैक्ट्री के पास, भीनासर में स्थित भूमि श्री अ.भा.सा. जैन संघ को दान स्वरूप प्रदान की गयी थी। महत्तम महोत्सव के स्थायी सामाजिक सेवा प्रकल्प में इस प्याऊ का शुभारंभ हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

महत्त्वपूर्ण सूचना

युगनिर्माता, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती चारित्रात्माओं के चातुर्मास जिन सौभाग्यशाली संघों को प्राप्त हुए हैं, वे सभी बधाई के पात्र हैं। निश्चय ही आपका संघ चारित्रात्माओं का सान्निध्य प्राप्त कर धर्म-ध्यान, त्याग-तपस्या और कर्म-निर्जरा में अग्रणी रहेगा।

चातुर्मास प्राप्त करने वाले सभी संघों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति चातुर्मास स्थल (पूर्ण पता सहित) की जानकारी और सम्पर्क सूत्र साफ व स्पष्ट अक्षरों में कार्यालय के सम्पर्क सूत्र **मो.: 9799061990, email: news@sadhumargi.com** पर भिजवाने की कृपा करावें। उपरोक्त सम्पर्क सूत्र पर भेजी गयी जानकारी ही मान्य होगी।

नोट : यदि किसी कारणवश चातुर्मास स्थल या अन्य जानकारी फाइनल नहीं हो तो भी कार्यालय को अवगत करावें, जिससे कार्य सुचारू रूप से किया जा सके।

-टीम श्रमणोपासक

महत्तम महोत्सव : मेरा महोत्सव

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

NO NAME BLAME

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री रामलालजी म.सा. के संयम जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ ने महत्तम महोत्सव-मेरा महोत्सव के रूप में धार्मिक भव्यता के साथ मनाने का निर्णय करते हुए प्रत्येक संघ परिवार एवं सकल जैन समाज को जोड़ने के दायित्व से इसकी शुरुआत की है ।

इस महोत्सव में 31 महीनों का प्रारूप बनाया गया है जिसे ज्ञान-तप और आराधना के साथ मनाया जा रहा है। जिसका प्रथम वर्ष (लगभग 7 माह) फरवरी 2023 में पूर्ण हो चुके हैं।

सभी प्रवृत्तियाँ आगे बढ़ रही हैं, इसी क्रम में मार्च माह की गतिविधियों की जानकारी :-

ज्ञानार्जन

- **श्रुत आरोहक :** 28 मार्च को श्रुत आरोहक भाग 1 की फाइनल परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें अब तक की रिपोर्टिंग के अनुसार लगभग 800 प्रतिभागियों ने यह परीक्षा दी है। किसी कारणवश जो पुराने रजिस्टर्ड प्रतिभागी फाइनल परीक्षा नहीं दे पाये या नये प्रतिभागी अभी भी इस प्रकल्प से जुड़ना चाहते हैं तो उनके लिए विशेष सूचना है कि वे सभी भाग 2 की फाइनल परीक्षा दे सकते हैं। जिसमें 40 प्रतिशत कोर्स भाग 1 पाठ्यक्रम से भी लिया जायेगा। भाग 2 की फाइनल परीक्षा संभवत: 18 फरवरी 2024 को होनी है।
- सिर्फ नए प्रतिभागी रजिस्ट्रेशन करवाकर भाग 1 और भाग 2 दोनों की पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।
- **श्रुत रमण :** हर क्षेत्र, हर घर में आगम का वांचन हो पाए, इसलिए न्यूनतम शुल्क राशि देकर जिनशासन की अनमोल धरोहर ''**आगम**'' प्राप्त कर सकते हैं।
- ज्ञानार्जन अंतर्गत आ रहे श्रुत रमण प्रकल्प में ऑफलाइन/ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है।
- रजिस्ट्रेशन करवाने के पश्चात् क्षेत्र के स्थानीय प्रमुख के पास राशि 100/- रुपये जमा करवा देवें।
- क्रमबद्धता से 30-35 दिनों में शुरुआती क्रम में पाँच आगम प्राप्त होंगे। आगम के नाम इस प्रकार हैं - श्रीमद् आचारांग सूत्र, श्रीमद् ज्ञाताधर्मकथा सूत्र, श्रीमद् निरयावलिका (पंचक), श्रीमद् अनुयोगद्वार सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र ।
- इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाइये और ''**श्रुत रमण**'' से जुड़ जाइये।
- **20 थोकड़े का कार्निवल :** जैन सिद्धांत बत्तीसी ऑफलाइन एक्टिविटी के माध्यम से मेले में घूमने वाले Giant Wheel को आधार बनाते हुए बहुत ही रोचक और उपयोगी लगने वाले प्रश्न पूछे गये, जिसमें लगभग 1100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

स्वाध्याय

- **श्रीमद् दशवैकालिक के 4 अध्ययन कंठस्थ करना :** श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चरण में परीक्षा, जिसमें (1-3 अध्ययन की परीक्षा ली गई थी) इसमें कुल 666 परीक्षार्थियों ने भाग लिया था। 13 वर्ष से कम आयु के परीक्षार्थियों ने अच्छे अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की। दूसरे चरण (चौथे अध्ययन) की परीक्षा 14 मई 2023 को होना निर्धारित है ।
- **आध्यात्मिक आरोग्यम् :** आचार्य भगवन् द्वारा प्रदान ''**आध्यात्मिक आरोग्यम्**'' के 9 बिंदुओं की समझने के लिए श्रीसंघ द्वारा बेहद ही सुंदर पुस्तक प्रकाशित हुई है, सभी श्रावक-श्राविकाओं से अनुरोध है कि इस प्रकल्प से जुड़कर पुस्तक के बिंदुओं को समझते हुए स्वयं के आध्यात्मिक आरोग्यम् को सुदृढ़ करें ।

संस्कार

- **अब कर कमाल 2.0 (सीजन 2) :** सीजन 1 के प्रतिसाद के पश्चात् संस्कार प्रवृत्ति सीजन 2 लेकर आयी है, जिसका ग्रांड फिनाले 18 जून 2023 को होना संभावित है। इसी सीजन की एक्टिविटी रूप में ऑफलाइन वीडियो मंगवाये गये।
- करीब 351 बच्चों ने वीडियो बनाकर भेजे हैं। बेहतरीन वीडियो को E-badges से सम्मानित किया जाएगा। साथ ही जिन अंचल (टॉप 3) से सबसे ज्यादा वीड़ियो अपलोड हुए हैं, उनके नाम निम्न हैं -

  प्रथम – छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल, **द्वितीय –** बीकानेर मारवाड़ अंचल, **तृतीय –** मध्यप्रदेश अंचल।
- **सामायिक कंठस्थ :** सामायिक कंठस्थ (प्रथम बैच) की परीक्षा सभी क्षेत्रों में सम्पन्न हुई। सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

  महत्तम महोत्सव की आने वाली सभी परिक्षाएँ एवं एक्टिविटी आदि की जानकारी ''**इन्द्रधनुष**'' पुस्तिका में दी गयी है। किसी भी प्रकल्प से जुड़ने हेतु यह पुस्तिका अवश्य पढ़ें।

  "No Name No Blame" संकल्पना के आधार पर सभी प्रकल्पों को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने के लिए महत्तम महोत्सव के सभी कार्यकर्ता पुरजोर प्रयास कर रहे हैं। बस इसी विश्वास के साथ कि निष्काम भाव से की जा रही इस संघ सेवा ''**महत्तम महोत्सव**'' के रूप में आचार्य भगवन् के चरणों में एक छोटी-सी सही पर भेंट अर्पण कर सकें।

  चाहिए तो बस आप सभी का सहयोग!!!

श्रमणोपासक सदस्यों से निवेदन

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र 'श्रमणोपासक' के सदस्यों से निवेदन है कि यदि आपके निवास स्थान के पते में किसी प्रकार का परिवर्तन हुआ है अथवा आपको पत्रिका बराबर नहीं मिल रही है तो हमें शीघ्र ही मो.नं. 9799061990 पर सूचित करने का कष्ट करें। यदि आपके पते में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी आपको श्रमणोपासक की प्रति प्राप्त नहीं हो रही अथवा दो-तीन माह के अन्तर से मिल रही है तो कृपया शीघ्र ही अपने नजदीकी डाकघर अथवा हैड पोस्ट ऑफिस में इसकी लिखित में शिकायत देवें और साथ ही हमें भी सूचित करावें। **-श्रमणोपासक टीम**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कर्नाटका-आंध्रा-तेलंगाना अंचल प्रवास

29 मार्च से 2 अप्रैल 2023

प्रवास टीम : राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, संघ शिखर सदस्य व टीम, इदं न मम् प्रभारी, दानपेटी योजना संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन संयोजक, महत्तम महोत्सव अंचल प्रभारी तथा कार्यसमिति सदस्यगण आदि।

दिनांक 29 मार्च को प्रवास टीम ने बेंगलुरु एयरपोर्ट से कडूर ग्राम पहुँचकर सामान्य संघ चर्चा के पश्चात् रात्रि विश्राम किया।

30 मार्च : कडूर-

- प्रात: कडूर समता भवन में प्रार्थना उपरांत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी के नेतृत्व में 4 दिवसीय प्रवास का विधिवत् शुभारंभ हुआ। यहाँ पर स्थानीय संघ सदस्यों के साथ आयोजित बैठक में कुलदीप जी नंदावत ने महत्तम महोत्सव, गंभीरजी साँखला ने इदं न मम् तथा उत्तमचंदजी कोठारी ने दानपेटी योजना के बारे में जानकारी प्रदान की। तदुपरांत राष्ट्रीय महामंत्रीजी द्वारा संघ प्रवृत्तियों एवं आयामों का विस्तृत विवेचन किया गया।
- राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में संघ को विकास की नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करने तथा आचार्य भगवन् के दिव्य स्वप्नों को साकार करने हेतु तत्परता से समग्र सहयोग हेतु आह्वान किया।
- इदं न मम् के हेतु 7 महानुभावों ने अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा 1 महाप्रभावक सदस्य की घोषणा हुयी।
- इस दौरान कार्यसमिति सदस्य, कडूर संघ अध्यक्ष/मंत्री का विशेष सहयोग रहा।

चिकमंगलूर-

- किरणचंदजी गुलगुलिया के निवास स्थान पर स्थानीय सदस्यों के साथ आयोजित बैठक में संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना के साथ संघ के प्रति अहोभाव किस प्रकार उत्पन्न हो इसकी प्रभावना राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा की गयी। यहाँ 5 सदस्यों ने इदं न मम्, 1 महाप्रभावक सदस्य तथा गुलगुलिया परिवार द्वारा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत निर्मित होने वाले समता भवनों के लिए 1 प्रतिशत अर्थसहयोग प्रत्येक समता भवन हेतु प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की गयी। यहाँ से प्रवासी दल का हासन पधारना हुआ।

हासन-

- यहाँ पर स्थानीय सदस्यों के साथ बैठक के दौरान राष्ट्रीय महामंत्रीजी द्वारा संघ प्रवृत्तियों एवं आयामों की प्रभावना करते हुए स्थानीय संघ सदस्यों से सुझाव आमंत्रित कर उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न प्रवृत्तियों के प्रभारियों ने प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला।
- राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा महत्तम महोत्सव का विवेचन करते हुए आचार्य भगवन् की गरिमा और उनकी धार्मिक क्रियाओं, गुणों को सदन में रखा गया। बैठक में महिला मंडल की भी सक्रिय सहभागिता रही। 4 सदस्यों ने इदं न मम् हेतु सहमति प्रदान की। यहाँ से प्रवासी दल होलेनरसिंहपुर की ओर रवाना हुआ।

*** होलेनरसिंहपुर-**

- स्थानक भवन में आयोजित सायंकालीन बैठक में स्थानीय सदस्य उत्साहपूर्ण सहभागिता निभाते हुए संघ प्रवृत्तियों और आयामों को समझकर उनसे

जुड़ने हेतु संकल्पित हुए। यहाँ 6 सदस्यों ने इदं न मम् हेतु स्वीकृति प्रदान की।

मैसूर-

- यहाँ पर रात्रि में स्व. श्री पारसमलजी दक के निवास पर उनकी धर्मसहायिका एवं पुत्र पद्मचंदजी दक सहित अन्य परिजनों से स्नेहमिलन में उनके अनुज भ्राता सुरेशजी दक एवं समरथमलजी दक ने महाप्रभावक सदस्यता हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा सम्पूर्ण परिवार की ओर से 5 लाख रुपये प्रतिवर्ष संघ की विशिष्ट प्रवृत्ति इदं न मम् हेतु प्रदान करने की घोषणा की गयी।

31 मार्च : मैसूर-

- तेरापंथ भवन में रात्रि विश्राम के उपरांत अगले दिवस 31 मार्च को प्रात: नवनिर्मित समता भवन में स्थानीय संघ, महिला समिति एवं युवा संघ सदस्यों के साथ बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें महत्तम महोत्सव, दानपेटी, इदं न मम् आदि पर प्रवृत्ति प्रभारियों द्वारा जानकारी प्रदान की गयी।
- राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने संघ की गतिविधियों एवं प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उपस्थित सदन से सुझाव, जिज्ञासाएँ एवं जानकारी हेतु प्रश्न आमंत्रित किये गये, जिनका राष्ट्रीय अध्यक्षजी द्वारा संतुष्टिप्रद समाधान दिया गया।
- राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्बोधन में सभी से संगठित होकर संघ के प्रति समर्पित होते हुए संघ प्रवृत्तियों में सहभागिता हेतु आह्वान किया।
- 15 सदस्यों ने इदं न मम् हेतु स्वीकृति प्रदान की। वीर पिता प्रवीणजी कटारिया ने संघ के अंतर्गत बनने वाले समता भवनों के लिए निर्माण लागत का 5 प्रतिशत, मंडी रोड़ (सवाईमाधोपुर) समता भवन हेतु 1 लाख रूपये, महत्तम महोत्सव के लिए अर्थ सहयोग प्रदान करने तथा वीर दादीजी श्रीमती सुन्दरदेवी कटारिया के नाम से महाप्रभावक सदस्यता के लिए स्वीकृति प्रदान की। कार्यक्रम में मैसूर संघ के महामंत्रीजी का विशेष सहयोग रहा। अंत में सुरेशजी दक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन व संघ समर्पणा गीत के साथ बैठक का समापन हुआ।

मांडिया-

- स्थानक भवन में प्रवास टीम के स्वागत उपरांत आयोजित बैठक में स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने प्रवास टीम का अभिनंदन करते हुए स्थानीय संघ में संचालित प्रवृत्तियों की जानकारी दी।
- राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्बोधन में 'संघ के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हुए हम किस प्रकार समस्या की बजाय सुझावों पर ध्यान देकर आगे बढ़ें सकते हैं' पर जानकारी प्रदान की।
- बैठक उपरांत धर्मीचंदजी डागा के निवास स्थान पर स्नेहमिलन का लाभ लिया। यहाँ 1 सदस्य द्वारा इदं न मम् के लिए स्वीकृति प्रदान की गयी।

बेंगलुरु-

- मांडिया से प्रवास टीम का बेंगलुरु पधारना हुआ, जहाँ संघ शिखर सदस्य तथा धर्मपाल प्रचार-प्रचार समिति के संयोजकजी के निवास स्थान पर स्नेह मिलन हुआ। संघ शिखर सदस्या एवं महिला समिति की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षाजी की कुशलक्षेम पूछी।
- तदुपरांत संघ शिखर सदस्य एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी के निवास पर स्नेह मिलन हुआ। आप द्वारा श्रीसंघ के अंतर्गत निर्मित होने वाले समता भवनों के लिए निर्माण लागत का 20 प्रतिशत तथा मंडी रोड़ (सवाईमाधोपुर) में निर्मित होने वाले समता भवन के लिए 5 लाख रुपये भूमि प्रदाता के रूप में प्रदान करने की घोषणा की गयी।
- संघ के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी के निवास पर प्रवास टीम का पधारना हुआ। आपने उदारता का परिचय देते हुए इदं न मम् के लिए पूर्व में घोषित राशि को 1 लाख रुपये से बढ़ाकर 3 लाख रुपये

करने तथा महत्तम महोत्सव के लिए 21 लाख रुपये प्रदान करने हेतु स्वीकृति प्रदान की।

1 अप्रैल : बेंगलुरु-

- प्रात: शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा. के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण के लाभ उपरांत प्रवासी दल ने कर्नाटका-आंध्रा-तेलंगाना अंचल के आंचलिक सम्मेलन 'WE CONNECT' में सहभागिता की।
- जिसके प्रथम चरण में 'The Golden Moments' विषय पर मोटिवेशनल स्पीकर राजेन्द्रजी दुदोड़िया ने 'संघ के प्रति समर्पणा, श्रद्धा कैसी होनी चाहिए और किस प्रकार इसे बढ़ाया जा सकता है' विषय पर शानदार प्रस्तुति दी।
- राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने आंचलिक रिपोर्ट एवं महत्तम महोत्सव संयोजकजी ने महत्तम महोत्सव एवं साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजकजी ने नवीन प्रकाशित साहित्य की जानकारी प्रदान की।
- इस अवसर पर अंचल के बेंगलुरु, मैसूर, हैदराबाद, मांडिया, हुबली, हासन, होलेनरसिंहपुर, कड्डूर संघों के अध्यक्ष, मंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही। इन दौरान विचार, शंकाएँ, सुझाव आदि सदन रखे गये, जिनका त्वरित समाधान राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने किया।
- श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ तथा महिला समिति के राष्ट्रीय अध्यक्षगणों ने अपने भाव सदन से साझा किये।
- अंत में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने संघ के विकास, संघ की रीति-नीति के पालन के साथ-साथ संघ के प्रति हमारी समर्पणा पर प्रकाश डाला।
- दोपहर भोजन उपरान्त तीनों इकाइयों की अलग-अलग आंचलिक स्तरीय बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें स्थानीय संघों से अनेक सुझाव प्राप्त हुए तथा बारीकी से विभिन्न विषयों पर मंथन हुआ। कर्नाटका-आंध्रा-तेलंगाना अंचल का आंचलिक ऑफिस बेंगलुरु में स्थापित करने हेतु सहमति प्राप्त हुयी।

चिकाबालापुरा-

- 2 अप्रैल 2023 को श्रीमती जेठीदेवी सिपानी फॉर्म हाऊस, चिकाबालापुरा में श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलूरु के तत्वावधान में '**महत्तम संगठनात्मक सम्मेलन**' का आयोजन हुआ, जिसमें कर्नाटका-आंध्रा-तेलंगाना अंचल के सभी स्थानीय संघों की तीनों इकाइयों के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों के साथ-साथ श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलूरु के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लगभग 1200 सदस्यों की उपस्थिति रही।
- प्रात: 10:30 से 1 बजे तक '**संघ हमारी पहचान**' कार्यक्रम, दोपहर 2:30 बजे से 4:00 बजे '**संघ मेरा दायित्व**' विषय पर अपनी-अपनी टीमों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही समता संस्कार पाठशालाओं के बच्चों द्वारा एक्जिबिशन स्टॉल के माध्यम से महत्तम महोत्सव व संघ प्रवृत्तियों पर नाटक द्वारा प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के दौरान ही 4 समता भवनों के निर्माण व 75 प्रतिशत तक सहयोग राशि की स्वीकृति प्राप्त हुयी।
- अंत में राष्ट्रीय अध्यक्षजी के प्रेरणादायी उद्बोधन के साथ क्षेत्रीय पारिवारिक सम्मलेन का समापन हुआ।
- यहाँ 29 सदस्यों ने इदं न मम्, 5 महानुभावों ने महाप्रभावक सदस्यता, 3 महानुभावों द्वारा महत्तम महोत्सव के लिए, 1 महानुभाव ने विहार सेवा तथा 4 सदस्यों द्वारा मंडी रोड़ (सवाईमाधोपुर) समता भवन हेतु 5 लाख रुपये प्रति समता भवन प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की।

वैशिष्ट्य एक नजर में :

- 71 सदस्यों द्वारा इदं न मम् के अंतर्गत कुल 37,88,124 रुपये की घोषणाएँ।
- 10 दानवीर भामाशाहों द्वारा महाप्रभावक सदस्यता हेतु स्वीकृति।
- 4 महानुभावों द्वारा महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 21,92,000 रुपये सहयोग राशि की स्वीकृति।
- 1 महानुभाव द्वारा विहार सेवा संयोजन सदस्यता।
- 3 महानुभावों द्वारा श्रीसंघ के अंतर्गत निर्मित होने वाले समता भवनों के लिए कुल 26 प्रतिशत अर्थ सहयोग।
- 6 महानुभावों द्वारा मंडी रोड़ (सवाईमाधोपुर) समता भवन के लिए 26 लाख रुपये का अर्थ सहयोग स्वीकृत।

–राष्ट्रीय मंत्री, कर्नाटका–आंध्रा–तेलंगाना अंचल

जीवन गाड़ी नियंत्रित हो

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

मनुष्य का हाथ अपने जीवन स्टेयरिंग पर होना चाहिए। वह जीवन की गाड़ी को जिधर घुमाना चाहे, जीवन गाड़ी उधर ही घूमे तो ही समझना चाहिए कि उसका जीवन रूपी गाड़ी पर नियंत्रण है। वह घुमाना चाहे गाड़ी को एक तरफ और गाड़ी घूम जाए किसी दूसरी ओर तो कहना होगा कि गाड़ी उसके नियंत्रण से बाहर है। जो अपनी जीवन गाड़ी को नियंत्रित रख पाया है उसने जीवन का आनन्द उठाया है। वह जीवन के रहस्यों को जान पाने में समर्थ हो पाया है, ऐसा कहा जा सकता है। जो जीवन जी तो रहा है किन्तु उस पर नियंत्रण उसका अपना नहीं है, जीवन गाड़ी स्वच्छन्दता से सरपट दौड़ी जा रही है, वह कितने समय तक सुरक्षित है? इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। व्यक्ति एकांगीपन से नहीं समग्रता से विचार करते हुए जीवन गाड़ी को जहाँ–जहाँ मोड़ना जरूरी हो मोड़े, जहाँ सरपट चलाना हो वहाँ सरपट चलाए। ऐसा न हो कि जहाँ मोड़ना हो वहीं वह सरपट दौड़ाने लगे। गाड़ी की ड्राइविंग करने वाला जानता है कि गाड़ी की गति–रफ्तार कहाँ बढ़ाना, कहाँ घटाना। जहाँ गाड़ी को धीमा करना हो तो वह उसके कुछ क्षण पूर्व से ही गाड़ी को धीमे करने का प्रयत्न करने लगता है। यदि यह विज्ञान उसे न हो तो गाड़ी कहीं पर भी खतरे में पड़ सकती है। खतरे में पड़ी गाड़ी ड्राइवर के लिए भी खतरा बन जाती है। अतः इंसान को दूसरों के जीवन के विषय में सोचने से पहले अपनी जीवन गाड़ी के विषय में सोचना चाहिए। स्वयं को स्वयं से नियंत्रित करने का, रखने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करने वाला ही जीवन को खतरों से बचाने में समर्थ हो सकता है, अन्यथा वह स्वयं को किन–किन खतरों में डाल देगा, कह पाना कठिन होगा।

आओ विचार करें! हमारी जीवन गाड़ी हमारे नियंत्रण में है या नहीं। क्या हमें उसे अपने नियंत्रण में नहीं लेना चाहिए? यदि अपना नियंत्रण होना चाहिए तो उसके लिए आपके पास क्या उपाय है?

चैत्र कृष्ण 13, रविवार, दिनांक : 26.03.2017 **साभार– उपांशु**

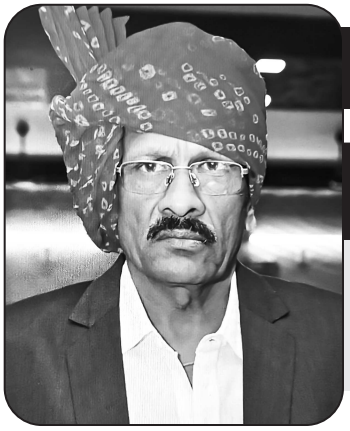

::: स्मृतिशेष :::

स्व. श्री इन्द्रचंदजी सुराणा

जन्म :
22 दिसम्बर 1961

स्वर्गवास :
09 अप्रैल 2023

जन्म और मरण के बीच का समय ही जीवनकाल कहलाता है, जो हमें कर्माधीन होने या कर्मक्षय करने का अवसर प्रदान करता है। हमारे सुकृत्यों के कीर्तिमान आत्मा को मोक्ष की ओर प्रशस्त करते हैं, तो दुष्कृत्य भवों-भवों का भ्रमण वृद्धित करते हैं। इस संसार में जीवों की संख्या अपार है और हर कोई अपने कर्मों में लीन है, लेकिन जीवन उसी का सार्थक है जो सच्चे धर्म के मार्ग पर अग्रसर होकर अपनी आत्मा को कर्मों से मुक्त कर मोक्ष की ओर गमन करता है। ऐसे ही आदर्श श्रावकों में हमारे आदरणीय **स्व. श्री इन्द्रचंदजी सुराणा** सुपुत्र स्व. श्री रतनलालजी सुराणा का नाम शुमार है। आपका स्वर्गवास 09 अप्रैल 2023 को दिल्ली में 62 वर्ष की आयु में हो गया।

आप कर्मनिष्ठा से ओत-प्रोत होकर सदैव ही सेवा में अग्रणी रहते थे। आपने श्री साधुमार्गी जैन संघ दिल्ली के विभिन्न पदों पर रहते हुए संघ उन्नयन में सहयोग किया। वर्तमान में आप श्री साधुमार्गी जैन संघ, दिल्ली के मंत्री एवं श्री केशवपुरम् जैन स्थानक संघ के कोषाध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे रहे थे।

गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव सजग रहते थे। पारिवारिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए आप संघ सेवा को सदैव ही सर्वोपरि रखते थे। निश्चल, मृदुभाषी, मिलनसार, सहज व्यक्तित्व से भरे आपके जीवन में बड़ों के प्रति मान-सम्मान और पारिवारिक संस्कारों की धरोहर प्रत्यक्ष परिलक्षित होती थी।

शासनदेव से यही प्रार्थना है कि आपश्री की आत्मा शीघ्र ही चरम लक्ष्य मोक्ष का वरण करे।

:: श्रद्धावनत् ::

सुन्दरदेवी (माताजी), **आशादेवी** (धर्मपत्नी), **ललिता** (पुत्री), **लोकेश-श्वेता** (पुत्र-पुत्रवधू), **उमरावदेवी** (भाभी), **अशोक कुमार, जसकरण, राजेंद्र कुमार, कमलचंद, विमलचंद, मनोज कुमार** (भाई), **संदीप, संजय, हितेष** (भतीजे), **कियान** (पौत्र), **सुमनदेवी-स्व. राजेन्द्र कुमारजी सुखानी**, बीकानेर, **बबिता-सत्येन्द्रकुमारजी सेठिया**, बीकानेर (बहन-बहनोई) एवं **समस्त सुराणा परिवार**
गंगाशहर, दिल्ली, बेंगलुरु, दुबई

ससुराल पक्ष : स्व. फूसराजजी अतुलकुमारजी बुच्चा, भीनासर/गुवाहाटी।

::: स्मृतिशेष :::

स्व. श्री मनोज जी संचेती

जन्म :
06 अप्रैल 1964

स्वर्गवास :
04 अप्रैल 2023

गुलाबबाग। भीनासर निवासी गुलाबबाग प्रवासी **श्री मनोजजी संचेती** का जन्म 06 अप्रैल 1964 को गुलाबबाग (पूर्णिया-बिहार) में हुआ। आपका ध्येय हमेशा साधारण एवं सरल जीवन जीने का रहता था। आपने कभी भी दिखावे एवं आडंबरों को नहीं अपनाया। आप आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के अनन्य भक्त थे और धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अपना समय व सेवा प्रदान करते थे। आपने अपने जीवनकाल में कई तपस्याएँ की, जिनमें 1 ग्यारह, 1 नौ, 3 अठाई, 1 छह व अनेक तेला तप आदि शामिल हैं। आपने गौ सेवा को विशेष महत्त्व दिया। आप बिहार क्षेत्र में चारित्रात्माओं की विहार सेवा का लाभ लेते थे। 04 अप्रैल 2023 को अचानक साइलेंट कार्डियक अरेस्ट (हृदयाघात) के कारण आपका 59 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

:: श्रद्धावनत् ::

शुभकरण-जतनदेवी (पिताजी-माताजी), **कांतादेवी संचेती** (धर्मपत्नी),
सी.ए. ऋषभ-स्नेहा संचेती, बैंगलोर, **यश-निशा संचेती** (पुत्र-पुत्रवधू),
मोनिका-विशालजी बोथरा (पुत्री-दामाद), **मास्टर हृदयांश** व **युवान** (दौहित्र),
संगीता-सज्जनजी कोठारी, सिलीगुड़ी, **प्रियंका-अशोकजी भूतोरिया**, हावड़ा (बहन-जीजाजी),
पारस संचेती, सिलीगुड़ी (भाई),
त्रिलोकचंद, राजकरण, विजय सिंह संचेती (चाचाजी)

प्रतिष्ठान

एग्रीबंड प्राईवेट लिमिटेड, पूर्णिया
इंडियन क्रॉप कंपनी, पूर्णिया
आर.एस.एन.ए एंड एसोसिएट्स, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, बैंगलोर, कोलकाता, पूर्णिया

विनम्र श्रद्धांजलि

देशनोक। सुश्राविका तुलसीदेवी धर्मसहायिका कन्हैयालालजी भूरा का 3 फरवरी को 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी। आपने 4 वर्षीतप, अठाई सहित अनेक छोटी-मोटी तपस्याएँ व त्याग-प्रत्याख्यान किये। आपके आजीवन शीलव्रत था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

चेन्नई। नेत्रदानी सुश्राविका कमलादेवी धर्मसहायिका स्व. श्री नवरतनलालजी बैद का 77 वर्ष की आयु में 3 फरवरी को निधन हो गया। आप दृढ़ मनोबली, सरल स्वभावी, मिलनसार एवं धार्मिक प्रवत्ति की महिला थी। आप श्री निर्वाणमुनिजी म.सा. की संसारपक्षीय बड़ी माँ थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

फलौदी। सुश्राविका चन्द्राबाई धर्मपत्नी मांगीलालजी बुरड़ का 18 फरवरी को 63 वर्ष की आयु में सागारी संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आप मृदुभाषी, सरल स्वभावी, मिलनसार महिला थी। आप चारित्रात्माओं की सेवा में हमेशा तत्पर रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

बालेसर दुर्गावता। सुश्राविका पतासीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री चनणमलजी पारख का 85 वर्ष की आयु में 20 फरवरी को पौषधोपवास में निधन हो गया। आप धर्मपरायण महिला थी। आपने मासखमण, 25, 9 एवं अठाई सहित लगातार 120 दिन संवर एवं श्रावण-भादवा एकान्तर तप कर जीवन को तप से सजाया था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

इन्दौर। सुश्रावक विनोदजी वोरा का 26 फरवरी को 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति एकनिष्ठ श्रद्धा थी। समाजसेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। स्थानीय संघ के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए आपने संघहित के अनेक कार्यों को मूर्त रूप दिया। आप कर्मठ, सरल एवं सौम्य स्वभाव के व्यक्तित्व थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

देशनोक। सुश्राविका लाडादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री छगनलालजी डोसी का 16 मार्च को चौविहार त्याग के साथ निधन हो गया। आप स्नेहमयी एवं मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थी। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए चारित्रात्माओं की सेवा लाभ लेती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

चेन्नई। सुश्राविका सूरजबाई धर्मपत्नी स्व. श्री जीवराजजी धारीवाल का 19 मार्च को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अटूट आस्था एवं श्रद्धा थी। धर्म-ध्यान, स्वाध्याय,

प्रतिदिन सामायिक आदि आप करती रहती थी। आपने 20 स्थानक की ओली, 15, 9 की तपस्या के साथ अनेक तेले, बेले व उपवास आदि तप किये। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गयी हैं।

कोलकाता। सुश्रावक रिखबदासजी भंसाली का 25 मार्च को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप

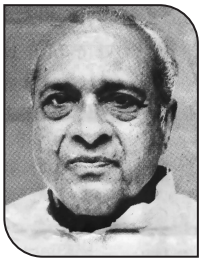

आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान थे। आप श्री साधुमार्गी जैन संघ सहित अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

बीकानेर। सुश्रावक शान्तिलालजी सुपुत्र श्री जेठमलजी

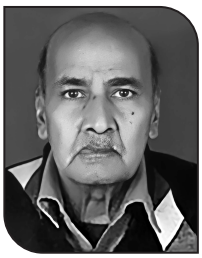

खटोल का 11 अप्रैल को 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी होने के साथ-साथ आप चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा में अग्रणी रहते थे। सामायिक एवं नवकार महामंत्र जाप में आपकी विशेष रुचि थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

मल्कानगिरी। सुश्रावक मिश्रीलालजी बाफना का 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने अनेक

वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा दी। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान एवं सभी चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

राजनांदगाँव। सुश्राविका ललिताजी धर्मपत्नी ताराचंदजी नाहटा का 07 अप्रैल को निधन हो गया। सादगी,

सहजता, सरलता, मिलनसारिता आपके विशिष्ट गुण थे। आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश पर आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप से प्राप्त संस्कारों के प्रतिफल रूप आपका पूरा परिवार सेवा, परोपकार में अग्रणी रहता है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

मुमुक्षु पारसमलजी बंब की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

मूँदी (खंडवा)। मुमुक्षु पारसमलजी बंब की भव्य जैन भागवती दीक्षा 15 मार्च 2023 को 1008 आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा. के सुशिष्य ब्रह्मपुत्र प्रवर्तक श्री जिनेन्द्रमुनिजी म.सा. की अनुज्ञा से श्री हेमंतमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। दीक्षा से पूर्व 07 मार्च को आपको पूर्ण सजग अवस्था में संथारे के पच्चक्खाण करवाये गये। नवीन नामकरण नवदीक्षित संत श्री पारसमुनिजी म.सा. की घोषणा के साथ ही सम्पूर्ण पाण्डाल जय-जयकारों से गूँज उठा। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के अनन्य भक्त और साधुमार्गी संघ के वरिष्ठ श्रावक होने के नाते आपश्रीजी को अंतिम समय तक उपस्थित संत मुनिराजों द्वारा 'जय गुरु नाना, जय गुरु राम' का जाप करवाया। संयम जीवन का दृढ़ता से पालन करते हुए 22 मार्च को आपश्रीजी का संथारा सीझा। आपश्रीजी की डोलयात्रा 23 मार्च को प्रातः 10:15 बजे मूँदी (खण्डवा) जैन स्थानक से रवाना होकर अन्तिम विश्राम स्थल पहुँची, जहाँ संसारपक्षीय परिजनों एवं संघ प्रमुखों ने आपको मुखाग्नि दी।

-रश्मि जेलमी

चिंतन की कड़ियाँ

एक छोड़ें, एक स्वीकार करें

यदि अन्य बुराइयाँ नहीं छोड़ सकें, अनेक अच्छाइयाँ नहीं अपना सकें तो कम से कम एक बुराई छोड़ें, एक अच्छाई स्वीकार करें। बुराई कोई भी हो, बुराई ही है। पर एक बुराई जिसका कुप्रभाव स्वयं के जीवन पर पड़ता है, परिवार के सदस्यों एवं समाज पर भी उसका कुप्रभाव पड़ता है। व्यापार पर भी उसका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है। स्वयं में आदमी उस बुराई से कमजोर होता है। परिवार वाले वैसी बुराई देखा-देखी अपनाने लगते हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि कोई भी बाप अपनी बुराई को अपने पुत्र में देखना नहीं चाहेगा। समाज व व्यापार में भी उसकी साख पर प्रश्नवाचक चिह्न लगता है। ऐसी कम से कम एक बुराई को अवश्य छोड़ देना चाहिए।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
(भ्रामरी)

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

आध्यात्मिक आरोग्यम्

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के अन्तर्गत वुमन्स मोटिवेशनल फोरम द्वारा शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक दिवस के पर चौथी ऑफलाईन गतिविधि महिला समिति के सदस्याओं के लिए आयोजित की गई।

Sadhumargi Women's Motivational Forum

भगवान महावीर एवं आचार्य श्री रामेश के भजनों और धार्मिक गीतों से सजी अंत्याक्षरी '**मधुरम् गीतम् महावीरम्**' में 12 अंचलों की महिला समिति की सदस्याओं ने सक्रिय भागीदारी निभायी।

भगवान महावीर के अमूल्य आयाम '**जीओ और जीने दो**' को आत्मसात् करते हुए '**एक कोशिश–एक प्रयास, भ्रूणहत्या त्याग का संकल्प करें हम आत्मसात्**' पर भी एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत 18 वर्ष से ऊपर की समस्त युवतियों व महिलाओं को संकल्प–पत्र के माध्यम से प्रेरित किया जा रहा है कि वे जीवनपर्यन्त न तो भ्रूणहत्या करेंगी, न करवाएँगी और न ही कभी इसके लिए किसी को प्रेरित करेंगी।

कुल रजिस्ट्रेशन फॉर्म

क्र.सं.	अंचल	भ्रूणहत्या त्याग संकल्प–पत्र	मधुरम् गीतम् महावीरम् (भागीदार)
1	मेवाड़	90	318
2	बीकानेर–मारवाड़	19	57
3	जयपुर–ब्यावर	58	123
4	मालवा	99	197
5	छत्तीसगढ़–उड़ीसा	184	342
6	तमिलनाडु	23	28
7	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश	18	13
8	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	54	170
9	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	66	192
10	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखंड–आंशिक उड़ीसा	7	11
11	पूर्वोत्तर	13	34
12	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरी	15	41
	कुल	**646**	**1526**

युवती शक्ति

वीर की गूँज

(A group slogan activity)

जीवन की राह को सरल बनाना है।
महावीर का संदेश घर-घर पहुँचाना है।।

ऐसे ही ऊर्जा से भरे slogans के साथ युवती शक्ति की युवतियों ने स्थानीय संयोजिकाओं के मार्गदर्शन से '**वीर की गूँज**' ग्रुप स्लोगन गतिविधि में हिस्सा लिया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति के तत्वावधान में युवती शक्ति ने चैत्र सुदी तेरस को भगवान महावीर जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर 12 अंचलों में युवती शक्ति की स्थानीय सदस्याओं ने सकल जैन संघों द्वारा आयोजित प्रभातफेरी/रैली में वीर प्रभु के सिद्धान्तों को शब्दों में पिरोकर जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इस प्रयास को सफल बनाने हेतु अंचल संयोजिकाओं और स्थानीय संयोजिकाओं ने सक्रिय पुरुषार्थ किया। क्षेत्र जिन्होंने बेहतरीन प्रस्तुति दी, उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. **मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई. :**
   मुंबई, सूरत, वड़ोदरा

2. **तमिलनाडु :**
   सेलम

3. **छत्तीसगढ़–उड़ीसा :**
कटंगी, भाटापारा, डोंडी, बालाघाट, डोंडीलोहारा
4. **मालवा :**
रतलाम, इन्दौर, जावद
5. **आंध्र–कर्नाटक :**
हैदराबाद, बेंगलुरू, कड्डुर
6. **पूर्वोत्तर :**
सिलापथार, बंगाईगाँव
7. **बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान :**
हावडा, हिंदमोटर
8. **महाराष्ट्र–विदर्भ :**
अक्कलकुआँ, धुलिया, शिरूड़, नागपुर
9. **बीकानेर–मारवाड़ :**
नागौर, नोखा, गंगाशहर
10. **जयपुर–ब्यावर :**
जयपुर

सभी स्थानीय युवती शक्ति टीम को बहुत–बहुत साधुवाद।

विशेष : गत माह आयोजित '**आध्यात्मिक आरोग्यम्**' प्रतियोगिता के विजेताओं को युवती शक्ति मंच की ओर से अनुमोदना पत्र और '**आध्यात्मिक आरोग्यम्**' पुस्तक भेंट दी गयी।

क्षेत्रीय सम्मेलन

कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 1 अप्रैल एवं 2 अप्रैल 2023 को कर्नाटक–आंध्रप्रदेश–तेलंगाना क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी सामूहिक मीटिंग महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा, राष्ट्रीय महामंत्री के सान्निध्य में अंचल की उपाध्यक्षा के नेतृत्व में आंचलिक स्थानीय संयोजिकाओं एवं क्षेत्रीय अध्यक्ष–मंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्याओं के साथ रखी गयी।

01 अप्रैल, मेवाड़ भवन, बेंगलुरु। मीटिंग की शुरुआत बेंगलुरु महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ हुई। मीटिंग का संचालन अंचल की राष्ट्रीय मंत्री द्वारा किया गया। सभी अंचल संयोजिकाओं ने अपनी–अपनी प्रवृत्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। सभी क्षेत्रों से पधारे हुए पदाधिकारीगण ने अपने मंडल में संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत बेंगलुरु महिला मंडल ने सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। अंचल के अनेक क्षेत्रों से महिलाओं की अच्छी उपस्थिति रही। युवती शक्ति द्वारा संचालित गतिविधि **युवती की कलम से (युवती शक्ति – एंथम)** में अंचल लेवल में टॉप आये प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

02 अप्रैल, सिपानी फार्म हाउस, बेंगलुरु। आचार्य भगवान् द्वारा प्रदत आयामों पर बेंगलुरु पाठशालाओं के विद्यार्थियों द्वारा महिला समिति की सदस्याओं के साथ मिलकर बहुत ही आकर्षक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक मॉडल बनाकर प्रदर्शित किये गये।

उत्क्रांति, संगठन एवं पाठशाला पर नाट्य मंचन द्वारा मनमोहक प्रस्तुति दी गयी। दोपहर 3 बजे स्थानीय महिला मंडल के साथ मीटिंग हुई जिसमें लगभग 150 महिलाओं की उपस्थित रही। मीटिंग में राष्ट्रीय अध्यक्षा ने प्रतिक्रमण सीखना तथा सिखाना एवं धोवन पानी के प्रयोग पर प्रकाश डाला।

अंत में कर्नाटक–आंध्रप्रदेश अंचल की उपाध्यक्षा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित कर संघ समर्पणा गीत के साथ मीटिंग सम्पन्न हुई।

सामाजिक कार्य

बीकानेर-मारवाड़ अंचल

नागौर : आचार्य श्री रामेश के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में नायक बस्ती के बच्चों को मिठाई, फल, नमकीन, चॉकलेट तथा स्टेशनरी का वितरण किया गया।

नोखा : केसर गौशाला, सुरपुरा के अंदर महिला मंडल द्वारा 5100/- की धनराशि जीवदया हेतु प्रदान की गयी।

भगवान महावीर जयंती व आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस के उपलक्ष्य में महिला मंडल द्वारा अस्पताल में मरीजों को फल व बिस्किट वितरण तथा आंगनबाड़ी बच्चों को स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों का वितरण किया गया। 11,000/- रुपये की धनराशि महिला मंडल नोखा द्वारा श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति को भेंट किये गये।

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

केसिंगा : जीवन आनंद वृद्धाश्रम, बहेराभाटा में कचौड़ी, जलेबी, फल वितरण किया गया। व्यसन-मुक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत शिशु मंदिर विद्यालय में 85 बच्चों को उद्‌बोधन दिया।

महाराष्ट्र-विदर्भ अंचल

नागपुर : गौशाला में 51,000/- रुपये की धनराशि प्रदान की गयी।

कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल

बेंगलुरु: समता महिला मंडल बेंगलुरु द्वारा 18 मार्च को सरजापुर रोड स्थित 'स्वन्थाना अनाथालय' पर 40 लड़कियों एवं 35 बुजुर्गों को आवश्यक चिकित्सा उपकरण एवं खाने का राशन वितरण किया गया।

आंचलिक प्रवास रिपोर्ट

मुंबई-गुजरात अंचल (त्रि-दिवसीय प्रवास)

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा के साथ समता छात्रवृत्ति की प्रवृत्ति संयोजिका, अंतरराष्ट्रीय संयोजिका, आंचलिक उपाध्यक्षा-मंत्री, स्थानीय अध्यक्षा-मंत्री द्वारा त्रि-दिवसीय प्रवास किया गया।

07 अप्रैल – मुंबई के उपनगर ठाणे व घाटकोपर :

1. मुंबई के उपनगर ठाणे व घाटकोपर क्षेत्रों में प्रवास किया। मीटिंग में 25 से 30 महिलाएँ उपस्थित रहीं। महिला समिति द्वारा प्रदत विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में समझाया गया तथा घर-घर में महत्तम महोत्सव की प्रेरणा दी गयी। नए सदस्यों को आजीवन सदस्य बनने की प्रेरणा दी।
2. पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती शोभा जी बैद ने सर्वधर्मी सहयोग हेतु 51,000/- की धनराशि प्रदान की।

08 अप्रैल – भायंदर:

1. सुबह भायंदर में श्री निश्चलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वंदन का लाभ लिया गया।
2. मुंबई समता महिला मंडल द्वारा श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति को 1,50,000/- की राशि प्रदान की गई। मीटिंग में 125 सदस्यों की उपस्थिति रही।

3. इसके बाद दोपहर 1 बजे मुंबई समता महिला मंडल की वार्षिक आमसभा में उपस्थित हुए। जहाँ पर युवती शक्ति एवं मोटिवेशनल फोरम द्वारा स्वागत गीत व मंगलाचरण की बहुत ही सुन्दर भावविभोर अभिव्यक्ति दी गयी, तत्पश्चात् महत्तम महोत्सव के विभिन्न सवालों के समाधान दिये गये।

09 अप्रैल – नवी मुंबई, पुणे :

1. सभी पदाधिकारीगण नवी मुंबई पधारे, जहाँ 12 मार्च को ही नया संघ बना था।
2. वहाँ महिला मंडल की पहली सभा आयोजित हुई।
3. 40 महिलाएँ उपस्थिति रहीं एवं 5 नए आजीवन सदस्य बनाये गये। नवी मुंबई में श्राविकाओं में बहुत ही उत्साह था तथा सकारात्मक ऊर्जा का संचरण हो रहा था।
4. वहाँ संघ की तीनों इकाइयों की सामूहिक सभा हुई। राष्ट्रीय अध्यक्षा द्वारा फरमाया गया कि संगठन का मजबूत होना अतिआवश्यक है तथा धर्म आराधना हेतु पूना में समता भवन अवश्य होना चाहिए। पूना संघ के पदाधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि जल्दी ही पूना में समता भवन होगा।

सभी जगह महिला समिति द्वारा विभिन्न प्रवृतियों के बारे में, महत्तम महोत्सव के 9 आयामों व धोवन पानी के महत्व को समझाया तथा समता संस्कार पाठशाला एवं जैन संस्कार पाठ्यक्रम से जुड़ने की प्रेरणा दी गयी। इसी के साथ गोल्डन स्टेप्स व आगामी आने वाली प्रवृत्ति गठबंधन पर भी बताया गया। इस प्रकार तीन दिवसीय प्रवास बहुत ही सकारात्मक रहा।

साहित्य सदस्यों हेतु महत्त्वपूर्ण सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के समस्त साहित्य सदस्यों को साहित्य की नवीन 8 पुस्तकों (ददतां वरः, झीलों पर सूर्योदय, झीलों में मंथन, झीलों की पारदर्शिता, झीलों का राजहंस, महकती झीलें, आध्यात्मिक आरोग्यम्, Equanimity : Philosophy and Practice) का सेट केंद्रीय कार्यालय बीकानेर से 1 जून 2023 से प्रेषित करना प्रारंभ किया जाएगा। आप द्वारा पूर्व में भेजे गए आपके पते में किसी प्रकार का परिवर्तन हो तो शीघ्र सूचित करने का कष्ट करें।

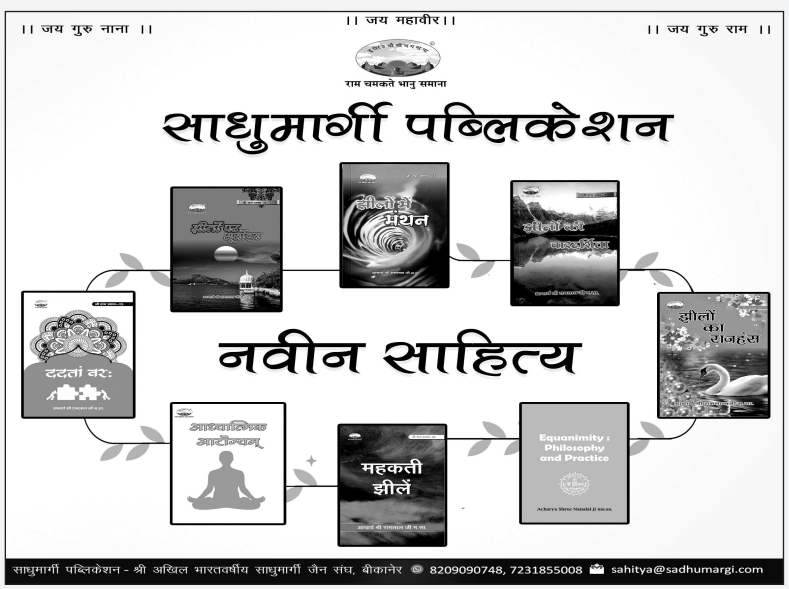

नवीन साहित्य सदस्यता ग्रहण करने हेतु नीचे दिये गये नंबर से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं–

साधुमार्गी पब्लिकेशन, बीकानेर
मो. 7231855008,
8209090748
–संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

25-26 मार्च को उदयपुर में AI v/s EI युवा शिविर आयोजित

उदयपुर। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. की असीम कृपा से नानेश ध्यान केन्द्र में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. के सानिध्य में 25-26 मार्च को दो दिवसीय प्रात:कालीन युवा शिविर AI v/s EI (Artificial Intelligence V/s Emotional Intelligence) विषय पर आयोजित किया गया।

शिविर में 165 से अधिक पुरुष व महिलाओं ने अपनी उत्साहपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवायी। प्रथम दिवस श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने Artificial Intelligence विषय पर फरमाया कि कृत्रिम बुद्धिमता मशीन पर आधारित है। मशीन जब, जो, जितना, जैसा, जितनी देर में चाहिए वह उपलब्ध करवाती है। मशीन इससे आगे एक पल मात्र भी कार्य नहीं करती। सुबह उठने से लेकर दिनभर के कार्य व रात्रि सोने तक हम मशीनों पर आधारित होते जा रहे हैं। गाय, भैंस का दूध दोहने के लिए भी मशीन का उपयोग किया जा रहा है। चूंकि मशीन में भाव नहीं होते हैं, इस कारण पूरा दूध दुहने के पश्चात् यदि मशीन बंद करना भूल जाएँ तो मशीन कार्य करती रहती है, यह कृत्रिमता कितनी नुकसानदायक है। क्या डिजिटल गुलाब भी कभी सुगंध दे सकते हैं? क्या डिजिटल बधाई में अपनापन होता है? अंत में म.सा.श्रीजी ने गीत *''बच्चों के बचपन से छल हो गया, सुना है बचपन डिजिटल हो गया''* प्रस्तुत कर बच्चों के बचपन से हो रहे खिलवाड़ का चित्रण प्रस्तुत किया।

द्वितीय दिवस को श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने Emotional Intelligence विषय पर फरमाया कि दो शब्द हैं- श्रद्धा व प्यार। श्रद्धा कुछ मांगती नहीं, प्यार मांगता है। श्रद्धा होने के लिए प्यार जरूरी है या ऐसे कहें कि श्रद्धा की नींव प्यार है। जो भय को जीत लेता है वह किसी को डराता नहीं है। रिश्ते बिखरने की बुनियाद भय है, प्रेम नहीं। रिश्तों में आप चौकीदार की भूमिका में हो या हमसफ़र की भूमिका में। गुस्सा करने में शर्म नहीं तो प्यार करने में कैसी शर्म! क्या आपने कभी भावों की यात्रा की है? अच्छे संस्कारों को सजाया है? रिश्ते बनते हैं, बिगड़ते हैं, पर रिश्तों में सम्बन्ध विच्छेद नहीं होना चाहिए।

बनावटी ऊपर जाता है, परन्तु भाव गहराई में उतरते हैं और रिश्ते मजबूत करते हैं। आधुनिक गैजेट बदलते रहेंगे, पर भाव कभी नहीं बदलेंगे। आप अपनों से अपने भाव जाहिर करें।

''दूर से पूछोगे तो सब ख़ैरियत ही कहेंगे।
पास में बैठोगे तो हाल-ए-दिल बयां होगा।।''

म.सा. ने फरमाया कि हर तरह की मशीनें इजाद की जा रही हैं। हो सके आँसू पोंछने वाली मशीन का निर्माण भी हो जाय, पर क्या वो हाथों की गर्मी और भाव दे पाएगी? क्या वह कंधे का अपनापन महसूस करा पाएगी?

इस तरह बहुत ही तार्किक तथ्यों के साथ शिविर का दूसरा दिन सम्पन्न हुआ। शिविर समापन पर 15 सूत्रीय फर्म के माध्यम से शिविरार्थियों ने भावों से जुड़े कुछ नियमों का अभ्यास करने का संकल्प लिया। म.सा. द्वारा मांगलिक के साथ शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

समता साइकिलोथॉन के जरिये व्यसनमुक्ति का सन्देश दिया

हैदराबाद। श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ द्वारा जैन सेवा संघ, शबरी के तत्वावधान में भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के अन्तर्गत 30 मार्च को थ्रिल सिटी, नेकलेस रोड पर शराब, तम्बाकू आदि से मुक्ति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समता साइकिलोथॉन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें आबाल-वृद्ध लगभग 250 जनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के शुभारंभ पर मुख्य अतिथि श्री मुथ्यम रेड्डी (एडिशनल चीफ डी.सी.पी., टी.एस. जेनको) ने विद्यार्थियों में शराब, तम्बाकू और ड्रग्स के बढ़ते उपयोग के बारे आगाह किया। उन्होंने इस तरह के आयोजन से जागरूकता फैलाने के प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम समापन पर अपोलो अस्पताल की डॉ. हरिता संगीनी (एम.डी. पल्मोनरी मेडिसिन-IDCCM) ने कहा कि शराब, धूम्रपान और नशीली दवाओं की लत बढ़ रही है, जिनका शरीर के लगभग हर अंग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। धूम्रपान और शराब को छोड़ना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। कार्यक्रम में समता महिला मंडल के युवतियों द्वारा समय पर शादी करने और बहू को शिक्षित करने पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। युवा संघ महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष ने आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

उत्क्रांति कार्यक्रम

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रान्ति की आभा सर्वत्र फैल रही है। अनेक परिवार, संघ और ग्राम आचार्य भगवन् के इंगित इशारों को शिरोधार्य करते हुए उत्क्रांति नियमों से अपने जीवन को सजा रहे हैं। ऐसे अनेक परिवार जिन्होंने अपने मांगलिक कार्यक्रम उत्क्रान्ति नियमों से सुसम्पन्न कर स्वयं व संघ का गौरव बढ़ाया है, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। पूरे भारतवर्ष से उत्क्रांति कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हो रही है, इस वर्ष में सम्पन्न कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

1. रतलाम निवासी विकासकुमारजी सरदारमलजी चपरोट की सुपुत्री प्रियांशी का मंगल परिणयोत्सव राजेशजी कटारिया के सुपुत्र प्रेरक के साथ 09 जनवरी को सुसम्पन्न हुआ।
2. रतलाम निवासी श्री झमकलालजी मोहनलालजी पिछोलिया की सुपुत्री शैफाली का मंगल परिणयोत्सव संजयकुमारजी सुमतिलालजी चपरोट के सुपुत्र सहज के साथ 23 जनवरी को सुसम्पन्न हुआ। द्वय परिवारों ने उत्क्रान्ति नियमों की पालना की।
3. रतलाम निवासी महेंद्रकुमारजी माणकलालजी हिंगड़ की सुपुत्री निहारिका का मंगल परिणयोत्सव दिलीपजी गाँधी के सुपुत्र रौनक के साथ 06 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
5. देशनोक निवासी किशनलालजी छाजेड़ की सुपुत्री कोमल का मंगल परिणयोत्सव प्रेमकुमारजी रांका के सुपुत्र अरिहंत के साथ 12 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
6. देशनोक निवासी नवीनजी हीरावत की सुपुत्री महिमा का मंगल परिणयोत्सव पदमचंदजी बोथरा के सुपुत्र तनमन के साथ 15 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।

7. रतलाम निवासी श्री सुभाषचंदजी कन्हैयालालजी मुरार की सुपुत्री सलोनी का मंगल परिणयोत्सव अशोकजी पितलिया के सुपुत्र वैभव के साथ 18 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
8. कोलकाता निवासी मनोजजी डागा के सुपुत्र रौनक का मंगल परिणयोत्सव मनोजजी भूरा की सुपुत्री अंजलि के साथ 21 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
9. रायपुर निवासी योगेशजी पारख की सुपुत्री रितिका का मंगल परिणयोत्सव किशोरचंदजी पींचा के सुपुत्र शुभम् के साथ 22 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
11. कानवन निवासी अनिलकुमारजी चौपड़ा की सुपुत्री प्रियंका का मंगल परिणयोत्सव प्रदीपकुमारजी मेहता के सुपुत्र शुभम् के साथ 27 फरवरी को सुसम्पन्न हुआ।
12. भीम निवासी राजेशकुमारजी गुरलिया की सुपुत्री दिव्यांशी का मंगल परिणयोत्सव राजकुमारजी पितलिया के सुपुत्र मेहुल के साथ 8 मार्च को सुसम्पन्न हुआ।
13. नोखा निवासी जयचंदलालजी बेताला के सुपुत्र गौरव का मंगल परिणयोत्सव वीरभ्राता अशोककुमारजी सिपानी की सुपुत्री अंकिता के साथ 9 मार्च को सुसम्पन्न हुआ।

आपके क्षेत्र में कहीं पर भी कोई आयोजन उत्क्रांति के नियमों के अन्तर्गत होता है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य भिजवाएँ। वह जानकारी साधुमार्गी संघ की सभी पत्रिकाओं में प्रकाशित की जायेगी। उत्क्रांति से सम्बंधित किसी भी प्रकार की शंका यदि आपके मन में हो तो निःसंकोच आप अपने सवाल हमें भेजें। हम आपके सवालों का समाधान जल्द ही करने का प्रयास करेंगे।

–राष्ट्रीय संयोजक, उत्क्रांति
श्री अ.भा.सा जैन समता युवा संघ, मो. 9425939631

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15–16 जून 2023** का धार्मिक अंक '**भोजन–विवेक/धर्म–विवेक**' पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में **जुलाई 2023** का धार्मिक अंक '**गोचरी–विवेक**' विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ– लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो. 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (मार्च माह)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	05-03	12-03	19-03	26-03
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	2009	1980	1898	1644
		आंचलिक क्षेत्र	90	91	91	94
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	879	804	896	835
		आंचलिक क्षेत्र	46	47	49	49
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	288	247	294	284
		आंचलिक क्षेत्र	24	24	25	23
4	मालवा	आंचलिक उपस्थिति	1027	983	1086	940
		आंचलिक क्षेत्र	79	81	79	76
5	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	2145	2151	1876	2030
		आंचलिक क्षेत्र	163	169	156	154
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	521	434	590	463
		आंचलिक क्षेत्र	29	29	29	27
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	258	264	282	270
		आंचलिक क्षेत्र	12	13	12	13
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	460	465	531	560
		आंचलिक क्षेत्र	32	28	29	30
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	547	592	639	622
		आंचलिक क्षेत्र	52	55	58	54
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	237	249	224	253
		आंचलिक क्षेत्र	28	30	30	30
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	204	219	201	216
		आंचलिक क्षेत्र	23	24	23	23
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	122	104	85	116
		आंचलिक क्षेत्र	7	7	7	6
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	15	13	13	12
		आंचलिक क्षेत्र	6	5	6	5
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		8712	8505	8615	8245
	कुल क्षेत्र		591	603	594	584

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले संघों की सूची (मासिक)

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	उदयपुर	1474	6.	दुर्ग	570
2.	सूरत	978	7.	गंगाशहर-भीनासर	566
3.	रायपुर	862	8.	चित्तौड़गढ़ (उत्क्रांति ग्राम)	563
4.	बड़ी सादड़ी (उत्क्रांति ग्राम)	624	9.	नोखा मंडी	542
5.	बेंगलुरु	587	10.	चेन्नई	531

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के नेश्राय में सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची									
दिनांक-17-04-2023									
01-मेवाड़ अंचल									
क्र. स.	**चारित्रात्माओं के नाम**	**ठाणा**	**विराजने का स्थान**	**सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर**	**क्र. स.**	**चारित्रात्माओं के नाम**	**ठाणा**	**विराजने का स्थान**	**सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर**
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**	4	34–35, हेमंत जी नंदावत का निवास, धाबाई कॉम्प्लैक्स, नाकोड़ा नगर, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495 महेशजी नाहटा 9406201351 7977370892	2	**बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.**	4	नानेश–रामेश समता भवन, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बसंतीलालजी चंडालिया 9829833198 आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305
3	शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा.	2	346,बलवंतसिंह जी बोर्दिया का निवास, भूपालपूरा, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	4	शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा.	2	कोठारी भवन, देवगढ़, राजसमंद (राज.)	राजेन्द्रजी पोखरना 9414786625 9588891558
5	शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा.	3	आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र, सुन्दरवास, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले)	11	जुहार जैन भवन, भूपालपूरा, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495
7	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	9	महावीर भवन, गांधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बसंतीलालजी चंडालिया 9829833198 आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305	8	शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा.	11	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेशजी कुदाल 9414683309 तखतमलजी लसोड़ 9166663441
9	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुन्तलाश्रीजी म.सा.	3	जैन भवन, बरखेड़ी, प्रतापगढ (राज.)	जयंतीलालजी ओसवाल 9660108001 महावीरजी जैन 9784425512	10	शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा.	7	समता भवन, फतेहनगर, उदयपुर (राज.)	बाबुलालजी लोढ़ा 9460208288 वर्धमानजी मारु 9414620552
11	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतनश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलालजी पोरवाल 9461273789 सुशीलकुमार जी नागौरी 9799999595	12	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले)	8	सुराणा पैट्रोल पम्प, खजूरी, डूंगरपुर (राज.)	विकासजी सुराणा 9001890343 पवनजी कोठारी 9928536339
13	शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा.	6	महावीर भवन, गांधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बसंतीलालजी चंडालिया 9829833198 आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305	14	शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा.	3	संजयजी जारोली का निवास, सर्वऋतू विलास, उदयपुर (राज.)	पवनजी कोठारी 99285 36339 अल्पेशजी धाकड़ 9929598487
15	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (देशनोक वाले)	3	समता भवन, बोहेड़ा, उदयपुर (राज.)	मनोजजी भंडारी 9414759180	16	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाश्रीजी म.सा.	13	कोठारी भवन, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495
17	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा.	4	समता भवन, गुडली, उदयपुर (राज.)	तरुणजी कावड़िया 8005710568	18	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुन्दरीश्रीजी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, नाईगाँव, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495 दीपकजी मोगरा 9460507711

19	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म.सा.	3	शंकरलालजी अहीर का निवास, पिलाखेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	शंकरलालजी अहीर 9602170806	20	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावतीश्रीजी म.सा.	3	शंकर समता भवन, शास्त्री नगर, भीलवाडा (राज.)	बलवंत सिंहजी रांका 9799738431 पारसमलजी कूकड़ा 9462241948
21	शासन दीपिका साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा.	9	महावीर भवन, मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीषजी पोखरना 9929805901 8947006584	22	शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा.	5	अशोकजी गांग का निवास, सुन्दरवास, उदयपुर (राज.)	पवनजी कोठारी 99285 36339 अल्पेशजी धाकड़ 9929598487
23	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. (कानोड वाले)	9	मदनलालजी श्रीश्रीमाल का निवास, से. 01, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बसंतीलालजी चंडालिया 9829833198 आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305	24	शासन दीपिका साध्वी श्री चारित्रप्रभाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, नई आबादी, प्रतापगढ़ (राज.)	कमलेशजी मालू 9928587164
25	शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाशजी मेहता 9784757565	26	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, देबारी, उदयपुर (राज.)	दीपकजी मोगरा 9460507711
27	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरभिश्रीजी म.सा. (नगरी वाले)	3	अनिलजी पोरवाल का निवास, नपावली, चित्तौड़गढ़ (राज.)	अनिलजी पोरवाल 9057542782	28	शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्माश्रीजी म.सा.	3	दशरथजी आंजना का निवास, वीरावली, प्रतापगढ़ (राज.)	कमलेशजी मालू 9928587164 दशरथजी आंजना 9587987216
29	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा.	3	जगदीशजी आमेटा का निवास, सांगवा, उदयपुर (राज.)	दीपकजी मोगरा 9460507711	30	शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, देवगढ़, राजसमन्द (राज.)	राजेन्द्रजी पोखरना 9414786625 9588891558
02 बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा.	3	बोथरा निवास, सुराना मोहल्ला, नई लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	2	शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा.	10	सेठिया कोटड़ी, कंसेरा बाजार के पास, मरोठी मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालालजी बैद 9166211111 राजेन्द्रकुमारजी गोलछा 9571840310
3	शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा.	3	समता भवन, अलाय, नागौर (राज.)	विकासजी सुराणा 7737570263 रामस्वरूपजी सोलंकी 9694398717	4	शासन दीपक श्री आदर्शमुनिजी म.सा.	2	सार्वजानिक प्याऊ, जसनगर से 4 किमी. पहले, पाली (राज.)	पवनजी बम्ब 9772965624 महेन्द्रजी लोढ़ा 9828054903 9214552100
5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा.	11	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालालजी बैद 9166211111 राजेन्द्रकुमारजी गोलछा 9571840310	6	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा.	4	महिला भवन, सेठिया कोटड़ी के पास, कंसेरा बाजार पास, मरोठी सेठिया मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालालजी बैद 9166211111 राजेन्द्रकुमारजी गोलछा 9571840310
7	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा.	4	प्रताप विला, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	8	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभाश्रीजी म.सा.	9	जैन स्थानक भवन, माल गोदाम रोड़, तेलियों का बास, बाड़मेर (राज.)	कैलाशजी बोहरा 9414384081

9	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेताश्रीजी म.सा.	4	गुलगुलिया निवास, रामदेव नगर, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	10	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाश्रीजी म.सा.	4	पटवा निवास, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
11	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभाश्रीजी म.सा.	5	सुगनचंदजी गुलेच्छा का निवास, तिलक नगर, महामंदिर, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008	12	शासन दीपिका साध्वी श्री विकासश्रीजी म.सा.	5	373,नेमीचंदजी चौरड़िया का निवास, हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)	नेमीचंदजी चौरड़िया 9413571242
13	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	3	हरिप्रसादजी खदरिया का निवास, पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.)	महेन्द्रजी कांकरिया 9414632813	14	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, पांचू, बीकानेर (राज.)	जयचंदजी बरड़िया 9444637865
15	शासन दीपिका साध्वी श्री चिरागश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, सरस्वती नगर, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008	16	शासन दीपिका साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा.	4	बोथरा कोटड़ी, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
03 जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	पर्यायज्येष्ठ श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा.	9	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	अरविन्दजी मूथा 9414010326 चेतनजी हिंगड़ 7597188424	2	शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, अलीगढ, टोंक (राज.)	ओमप्रकाशजी जैन 9024257266
3	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा.	6	कांकरिया डेलान, नयाबास ब्यावर, अजमेर (राज.)	अरविन्दजी मूथा 9414010326 चेतनजी हिंगड़ 7597188424	4	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा.	3	महावीर भवन, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंदजी मूथा 9414054971 अभयजी नाहर 9829165897 मुकेशजी जारोली 9351149600
5	शासन दीपिका साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा.	8	बी–168, जितेन्द्रजी मूथा का ऑफिस, आनन्दपुरी, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंदजी मूथा 9414054971 अभयजी नाहर 9829165897 मुकेशजी जारोली 9351149600	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुजाताश्रीजी म.सा.	3	बी–9, इन्दरचंदजी लुणावत का निवास, बरकत नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंदजी मूथा 9414054971 अभयजी नाहर 9829165897 मुकेशजी जारोली 9351149600
7	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, ओसवाल मोहल्ला, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर (राज.)	धर्मेंद्र जी चौपड़ा 9828210721	8	शासन दीपिका साध्वी श्री ह्रींकारश्रीजी म.सा.	3	श्री प्राज्ञ स्वाध्याय भवन, बिजयनगर, अजमेर (राज.)	धर्मीचंदजी रांका 9414574308
04 मालवा अंचल									
1	शासन दीपक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, महालक्ष्मी नगर, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200	2	शासन दीपक श्री उदितमुनिजी म.सा.	2	शांतिलालजी बोथरा का निवास, बुधवारा, बुरहानपुर (म.प्र.)	पंकजजी मेहता 9826622271 अरुणजी लुंकड़ 9039721546

3	शासन दीपक श्री सुमितमुनिजी म.सा.	3	समता भवन, गोपाल गौशाला कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	4	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. (पिपलियामण्डी)	8	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली नं. 2, नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.)	बाबूलालजी पितलिया 9425369562 नरेन्द्रकुमारजी चौधरी 9425369547
5	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	3	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345	6	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांताश्रीजी म.सा.	15	समता भवन, यशवंत निवास रोड़, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200
7	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म. सा. (जावरा)	4	साधुमार्गी जैन स्थानक भवन, पिपलियामंडी, मनासा रोड़, मंदसौर (म.प्र.)	मनोहरजी खिन्दावत 9425105061 पारसमलजी भण्डारी 8964868181	8	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.सा.	6	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717
9	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणाश्रीजी म.सा.	5	महावीर भवन, जामुनियाकलां, नीमच (म.प्र.)	कमलेशजी नागौरी 8815305253 9479824266 7610677253	10	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा.	3	किशनलालजी नागदा का निवास, गिरदौड़ा, नीमच (म.प्र.)	किशनलालजी नागदा 9424097138
11	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा.	4	अशोकजी पिरोदिया का निवास, गोपाल नगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	12	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबालाश्रीजी म. सा.	8	समता भवन, जवाहरपथ, जावरा, रतलाम (म.प्र.)	अभयकुमारजी भण्डारी 8989605240 मनीषजी पोखरना 9893482863
13	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा.	3	ईश्वरजी राहगडाले का निवास, बुदबुदा, बालाघाट(म.प्र.)	ईश्वरजी राहंगडाले 9424937479	14	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबालाश्रीजी म.सा.	3	वर्धमान जैन स्थानक भवन, सरवानिया महाराज, नीमच (म.प्र.)	जतनलालजी फाफरिया 7898794927
15	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, पाडलिया, खंडवा (म.प्र.)	माणकचंदजी जैन 9754507700	16	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, काटजू नगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717
17	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा.	3	फॉरेस्ट रेस्ट हाऊस, ढ़ेकना, हरदा (म.प्र.)	राजकुमारजी बाफना 9425044366	18	शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा.	4	जैन दिवाकर भवन, नामली, रतलाम (म.प्र.)	संजयजी पावेचा 9479785051
19	शासन दीपिका साध्वी श्री हितैषीश्रीजी म.सा.	3	ढ़ाबरियाजी का निवास, अमलताश कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	20	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगारश्रीजी म.सा.	4	नया जैन स्थानक भवन, इच्छापुर, बुरहानपुर(म.प्र.)	नरेंद्रजी चौरड़िया 9425951533
05 छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा.	2	समता भवन, केसिंगा, कालाहांडी (उड़ीसा)	सतीशजी जैन, केसिंगा 9556384050	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शनमुनिजी म.सा.	2	ओसवाल भवन, मेन रोड़, कोंडागाँव (छ.ग.)	मुकेशजी सुराणा 9399251661
3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेन्द्रजी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीपजी बोथरा 9424119340	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणिश्रीजी म.सा.	3	जैन भवन, बेरला, बेमेतरा (छ.ग.)	सुभाषजी जैन 9926258621

5	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (भीनासर वाले)	5	वर्धमान जैन स्थानक भवन, डोंगरगाँव, राजनांदगांव (छ.ग.)	अशोकजी लोढ़ा 9893419781	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीलाश्रीजी म.सा.	4	मोहनलालजी बाफना का निवास, वल्लभ नगर, रायपुर (छ.ग.)	उदयराजजी पारख 7000495055 मोहनलालजी बाफना 9893127991
06 कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेहमुनिजी म.सा.	2	गुजराती जैन स्थानक भवन, रामकोट, हैदराबाद (तेलंगाना)	सुरेशजी बोहरा 9347013918 राजूजी जैन 8897447332	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभाश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, इलकल, कोप्पल (कर्ना.)	दिनेशजी कटारिया 9448008017
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा.	4	गुरुकुल स्कूल, केशवपुरम्, हुबली, धारवाड़ (कर्ना.)	संजयजी कटारिया 9880538484	4	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा.	7	श्री महावीर जैन भवन, राजाजीनगर, बेंगलुरु (कर्ना.)	अशोकजी नागौरी 9845316923 किशोरजी कर्नावट 9845038597
08 मुम्बई-गुजरात अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा.	3	तेरापंथ भवन, शांति पार्क, पूनम नगर, मीरा रोड (ईस्ट), मुम्बई (महा.)	शकेन्द्रजी छाजेड़ 9869651177	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभाश्रीजी म.सा.	4	जैन मंदिर, रविराज अपार्टमेंट के पास, वालिया चौकड़ी, अंकलेश्वर, भरूच (गुज.)	पंकजजी कांकरिया 8866061008 गौतमजी गाँधी 9429282504
3	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभाश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री संयतिश्रीजी म.सा.	6	बंगला नं. 68, अमिवर्षा सोसायटी, केयर क्योर हॉस्पिटल के पास, जी.आई.डी.सी., अंकलेश्वर, भरूच (गुज.)	गौतमजी गाँधी 9429282504 जयंतीलालजी गाँधी 9429282504	4	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाश्रीजी म.सा.	3	74, सनसिटी, टेन रोड़, बारडोली, सूरत (गुज.)	बाबूलालजी जैन 9824725700
09 महाराष्ट्र-खानदेश-विदर्भ अंचल									
1	शासन दीपक श्री पद्ममुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, नशीराबाद, जलगाँव (महा.)	निलेशजी पगारिया 9329421008	2	शासन दीपक श्री छत्रांकमुनिजी म.सा.	2	स्वाध्याय भवन, मलकापुर, बुलढाना (महा.)	शुगनचंदजी आबड़ 9423146412
3	शासन दीपक श्री सुबाहुमुनिजी म.सा.	2	अजयजी राखेचा के निवास के सामने, न्यू ट्विन बंगलो, अरिहंत कॉलोनी, जलगाँव (महा.)	निलेशजी पगारिया 9329421008	4	शासन दीपक श्री जयप्रभमुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, मुक्ताईनगर, जलगाँव (महा.)	रमणजी वागरेचा 9422573735
5	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पनाश्रीजी म.सा.	3	पंकजजी चौधरी का निवास, रायखेड़, नंदुरबार (महा.)	पंकजजी चौधरी 7990308682	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा.	5	राजेन्द्रजी सिसोदिया का निवास, रामेश्वरनगर, पाईप लाइन रोड, नाशिक (महा.)	राजेन्द्रजी सिसोदिया 9423145204
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्तिश्रीजी म.सा.	3	आराधना भवन, माढेली, चन्द्रपुर (महा.)	मनीषजी बोगावत 9307269473 राजेन्द्रजी फलोदिया 9403300501	8	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा.	5	तुलसी पोगा फैक्ट्री, व्याला से 4 किमी. आगे, बुलढाना (महा.)	रितेशजी पारख 8806888192

10 बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा.	8	नया समता भवन, भवानीपुर, कोलकाता (प.बं.)	निश्चलजी कांकरिया 9830022963 रौनकजी डागा 9831093599 9748644599					
12 दिल्ली-पंजाब-हरियाणा, उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपक श्री संजयमुनिजी म.सा.	3	राजकीय स्कूल भवन, ओबरा, भिवानी (हरियाणा)	राजकुमारजी 9812610198	2	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांतश्रीजी म.सा.	4	एस.एस. जैन सभा भवन, बड़ी हैबोवाल, लुधियाना (पंजाब)	शांतिलालजी सेठिया 94172 03734 निर्मलजी मारोठी 9417034214
3	शासन दीपिका साध्वी श्री समयाश्रीजी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, कृष्णा नगर, दिल्ली	सुरेशजी जैन 9810556065 जतनजी भूरा 9811160100					

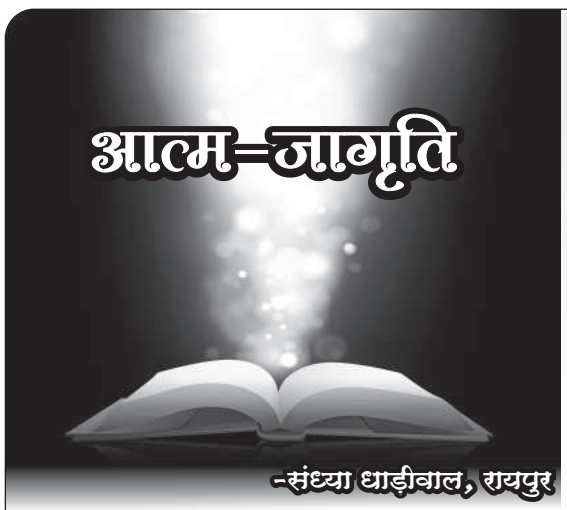

भक्तिरस

आत्मा के विकास की बातें
आत्म समता से मुलाकातें
आत्म शुद्धि की अनुपम बेला में
आत्म प्रसन्नता की बात करो।

आत्म जागृति से
आत्मरक्षा में पराक्रम करो
विषयों से विरक्ति ही तुम्हें
राग-द्वेष से दूर ले जाएगी
आत्म निग्रह, आत्मा से मित्रता
आत्मा में लगे , अतीत व भविष्य के
कर्मों से मुक्ति दिलाएगी।

तब ही तो ''संध्या'' तुम्हारे जीवन में
आध्यात्मिक आरोहण की
सुखद सुबह आएगी
आत्म प्रसन्नता बढ़ जाएगी।

सुनो !! विश्व मैत्री का स्वर गूँज रहा
'नाना'-'राम' की बगिया में
आध्यात्मिक आरोग्यम् का
बिगुल बजा रहे श्रमण
वीणा बन संघ के उपवन में
महक आध्यात्मिक आरोग्यम् की
भर लो तुम अपने सीने में।

पथ के सारे शूल तो चुन लिए
दोनों गुरु भगवन्तों ने
अब तो संयम के फूल ही हैं बाकी
जिसको भर लो तुम अपने जीवन में।

तब ही तो.....
आध्यात्मिक आरोहण की
सुखद सुबह आएगी
आत्म प्रसन्नता बढ़ जाएगी।

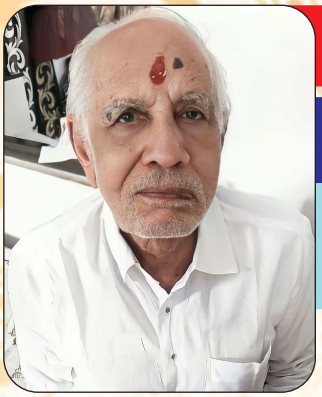

::: स्मृतिशेष :::

स्व. श्री सम्पतलाल जी रांका

जन्म :	स्वर्गवास :
01 मई 1933	07 मार्च 2023

देशनोक। धर्मनिष्ठ सुश्रावक **श्री सम्पतलाल जी रांका** सुपुत्र स्व. श्री सुजानमलजी-लक्ष्मीदेवी रांका, देशनोक निवासी, पुरी (उड़ीसा) प्रवासी का 07 मार्च 2023 को 90 वर्ष की आयु में हार्ट अटैक से अचानक देहावसान हो गया। आप मिलनसार, सहनशील, मृदुभाषी, सहज प्रकृति के धनी थे। आप अपना कार्य स्वयं करने व सदा सक्रिय रहने में विश्वास रखते थे। आपके प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय, पौरसी व रात्रिभोजन त्याग का नियम था। आपको पूर्व आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा., आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा., आचार्य श्री नानालालजी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. सहित चार आचार्यों के दर्शन-सेवा का लाभ मिला। आप व आपकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती भंवरीदेवी रांका जिनशासन के प्रति दृढ़-श्रद्धा एवं समर्पणा रखते थे।

आपने अपने पिताजी के सान्निध्य में 75 वर्ष पूर्व पुरी में व्यापार प्रारंभ किया, जिनका संचालन मैसर्स सुजानमलजी रांका, एस.एल.आर. ट्रेडिंग कं. व एस.एल. एंटरप्राईजेज के नाम से आपके पुत्रों व पौत्रों द्वारा किया जा रहा है। आप पीलिया रोग के ख्यातिलब्ध चिकित्सक के रूप में अच्छी पैठ रखते थे। आप पीलिया रोग की दवा नि:शुल्क देते थे, जिससे लाखों लोग उपकृत हुए हैं। आपने राम नाम का जाप करते हुए इस दुनिया से विदा ली।

शासनदेव से यही करबद्ध प्रार्थना है कि आपकी दिव्य आत्मा शीघ्रातिशीघ्र सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनकर अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करें तथा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणादायक रहें।

सिखाया आपने जीना सरल जीवन, जिनशासन में समर्पित रहे आप आजीवन।
पता नहीं था इतनी जल्दी छूटेगा आपका साथ,
पर ये पता है सर पर रहेगा सर्वदा आपका हाथ।
अब यादों के सहारे जीएँगे हम, नम आँखों से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं हम।।

:: श्रद्धावनत् ::

करणीदान-मघादेवी, कन्हैयालाल-सरलादेवी, कैलाशचन्द-जयश्रीदेवी (पुत्र-पुत्रवधू),
कंचनबाई-अमरचन्दजी बुच्चा, मूलीबाई-स्व. प्रेमरतनजी झाबक, पुष्पाबाई-दीपचन्दजी छल्लाणी,
विनिताबाई-सुरेन्द्रजी सेठिया (पुत्री-दामाद), **जितेश, अंकित-पूजा, नितेश-रुचिका, संयम** (पौत्र-पौत्रवधू),
अंजना-ललितजी नाहटा, समता (पौत्री-दामाद), **रिद्धि, सिद्धि, देवांशी, बाबू** (पड़पौत्रियाँ, पड़पौत्र),
अजित-सुमिता, संजीत-सोनल, पंकज-दीप्ति, प्रवीण-कुसुम, प्रशान्त, सिद्धार्थ, शुभम् (दोहिता-दोहितावधू),
आयुष, प्राची, काव्या, कविश, रौनक, रक्षित, प्रांशी (पड़दोहिता, पड़दोहिती)
ससुराल पक्ष : स्व. श्री विजयचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी नाहटा परिवार, बीकानेर

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

प्रतिक्रमण - प्रतियोगिता

भावों का शुद्धिकरण, आओ करें नित्य प्रतिक्रमण

अशुभ योग को त्यागकर पुनः शुभ योग में आ जाना प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण साधक के लिए निर्जरा का प्रबल कारक है। मोक्ष की राह पर चलने की पहली सीढ़ी प्रतिक्रमण है।

✶ प्रतिक्रमण प्रतियोगिता लाने के पीछे हमारे भाव क्या हैं ?

प्रतिक्रमण अपनी पूंजी है, आधार है। इसे हर घर तक पहुंचाना है, यह कोशिश हम सब को मिलकर करनी है। लगभग हर घर में 1 सदस्य तो प्रतिक्रमण कराने वाला हो और वो भी संशुद्ध प्रतिक्रमण हो।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)
(महतम महोत्सव – मेरा महोत्सव)
भावों का शुद्धिकरण
आओ करें नित्य प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण

प्रतियोगिता तीन चरण मे रखी गई है।

प्रथम चरण इच्छामि खमासमणो तक
1 अप्रैल से 15 मई

द्वितीय चरण भाव वंदना तक
15 मई से 1 जुलाई

तृतीय चरण संपूर्ण प्रतिक्रमण
1 जुलाई से 15 अगस्त

हेल्पलाइन नंबर - 9752289969, 8149465041

नियम

Google Link
https://forms.gle/pCYbcQQhbJiYjDb58

- जिसे भी प्रतिक्रमण सीखना है उसके लिए ऑनलाइन पंजीकरण करवाना अनिवार्य रहेगा।
- बड़ी संलेखना, भाव वंदना तक किसी का प्रतिक्रमण हुआ है, वो भी पंजीकरण करवा सकते हैं।
- श्रावक-श्राविका तथा बच्चे सभी आयु वर्ग के इसमें भाग ले सकते हैं।
- अंतिम तिथि (15 अगस्त) के 2 दिन पहले अपने-अपने क्षेत्र के स्थानक में विधि सहित प्रतिक्रमण करके बताना अनिवार्य रहेगा।
- प्रतिक्रमण में संशोधित नीले रंग के कवर वाली, गुलाबी रंग के कवर वाली, जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 3/4, अंग्रेजी वर्जन चारों किताबों में से कोई भी किताब मान्य रहेगी।

सभी सहभागियों को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

हृदय से करें हम सर्वधर्मी समर्पण
उससे ऊँचा है गुरु चरणों में सर्वस्व अर्पण

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

सर्वधर्मी समर्पण (अप्रैल-मई-जून)

सर्वधर्मी को आर्थिक/शिक्षा तथा रोजगार में सहयोग कर सकते हैं।

समस्त स्थानीय महिला मंडल से निवेदन है कि वह अपने-अपने क्षेत्र की रिर्पोट अवश्य बनाकर भेजें।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि महिला समिति एवं श्री संघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

वेबसाइट–

www.sadhumargi.com/application-form/
www.sabsjmsorg/downloads/

2023-24 में छात्रवृत्ति का नया फॉर्म बनाया गया है केवल वही फॉर्म मान्य रहेगा। फॉर्म महिला समिति की वेबसाइट पर अपलोडेड है।

सम्पर्क सूत्र : 7231033008

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

तीनों इकाई के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं स्थानीय अध्यक्ष/मंत्री से करबद्ध निवेदन है कि अपने क्षेत्र में समता छात्रवृत्ति की प्रभावना करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

राम चमकते भानु समाना

॥ जय गुरु राम ॥

राष्ट्र संघ कार्य स्वरूप

सत्र 22-24

हमारे देश में हमेशा से ही मानव-सेवा की परम्परा रही है। जल-सेवा भी इसी संस्कृति से प्रेरित है। पानी ही अमृत है। गर्मी के मौसम में प्यासे राहगीरों को शीतल जल सुलभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत है -

अमृतम

(समता जल-सेवा प्रकल्प)

सभी संघ से निवेदन-
ग्रीष्मकाल में प्याऊ संचालन का लक्ष्य रखें।

जल-सेवा कहाँ कर सकते हैं ?

1. आवश्यकतानुसार स्थान पर।
2. बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, हॉस्पिटल, प्रतीक्षालय।
3. विद्यालय, सार्वजनिक स्थान, व्यस्त मार्ग।
4. स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति अनुरूप स्थान का चयन।

जल-सेवा में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. स्थान का चयन स्थानीय प्रशासनिक नियमानुसार।
2. स्थान साफ, स्वच्छ, सुथरा व पानी का भराव न हो।
3. स्थानीय सदस्य देख-रेख कर सके, ऐसा स्थान हो।
4. Save Water - Save Earth

नोट- कृपया उक्त कार्यक्रम की रिपोर्ट इस मोबाइल नं. +91-70732-38777 पर अवश्य भेजें।

टीम सामाजिक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

::: श्रद्धासुमन :::

जन्म :
01 जनवरी 1947

स्वर्गवास :
03 दिसम्बर 2022

सुश्रावक स्व. पन्नालालजी बोथलालजी लोढ़ा

मनुष्य का जन्म और मरण निश्चित है, जो हर किसी के साथ जुड़ा है। संयोग-वियोग की इसी परम्परा में संसार का प्रत्येक जीव गतिमान है। इसी क्रम में हमारे आदरणीय **श्री पन्नालालजी बोथलालजी लोढ़ा**, चिकारड़ा निवासी, अहमदाबाद प्रवासी का 03 दिसम्बर 2022 को देहावसान हो गया था। आप सहज, सरल, मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की भक्ति से पूर्णतः ओत-प्रोत और समाजसेवा के कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने वर्ष में 3-4 बार गुरुदर्शन का नियम आजीवन पालन किया और अपने परिवार को भी इसी भावना से गुरुदर्शन का लाभ लेने, सामायिक व धर्माराधना करने का प्रोत्साहन दिया। प्रत्येक रविवार को परिवार में सामूहिक समता शाखा का आयोजन होता था। त्याग-प्रत्याख्यान से परिपूर्ण आपका जीवन अन्यों के लिए प्रेरणास्पद था।

:: श्रद्धावनत् ::

कन्हैयालाल-शकुन्तलादेवी लोढ़ा,
महावीर (रवि)-प्रतिभा लोढ़ा,
ललित-किंजल लोढ़ा,
मनस, धीर, तक्ष, तक्ष्वी लोढ़ा,
देवेन्द्र कुमार-प्रीति बोहरा, संदीप कुमार-रानी चौधरी

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीराय नमः ।। ।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रवास की उपलब्धियाँ

कर्नाटक आंध्रप्रदेश तेलंगाना अंचल प्रवास एवं महत्तम व संगठनात्मक आंचलिक सम्मलेन

दिनांक 30 मार्च से 2 अप्रैल 2023 (4 दिवसीय)

प्रवास स्थल कड्डूर, चिकमंगलूर हासन, होलेनरसिंहपुर मैसूर, मांडिया, बेंगलुरु।

10 महानुभावों द्वारा महाप्रभावक सदस्यता हेतु स्वीकृति।

4 महानुभावों द्वारा महत्तम महोत्सव के लिए 21.92 लाख रुपये की घोषणा।

इदं न मम् के अंतर्गत 72 सदस्यों द्वारा 37.88 लाख रुपये की घोषणा।

Interactive Session "Golden Moment & We Connect" के माध्यम से International Trainner & Author सुश्रावक श्री राजेन्द्र जी जैन द्वारा नेतृत्व का संघ, संगठन व समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रभावशाली प्रस्तुति।

मंडी रोड (सवाईमाधोपुर) समता भवन के लिए भूमि प्रदाता के रूप में 6 महानुभावों द्वारा 26 लाख रुपये के अर्थ सहयोग की घोषणा।

श्रीसंघ के अंतर्गत निर्मित होने वाले समता भवनों के लिए 26 प्रतिशत सहयोग की घोषणाएँ।

विहार सेवा के अंतर्गत 1 सदस्य की घोषणा।

- ★ सभी प्रवास स्थलों पर समता संस्कार पाठशाला, महत्तम महोत्सव, इदं न मम्, ग्लोबल कार्ड आदि प्रवृत्तियों की प्रभावना प्रवृत्ति प्रभारियों द्वारा।
- ★ समता संस्कार पाठशाला के बच्चों द्वारा महत्तम महोत्सव के 9 बिन्दुओं पर प्रदर्शनी एवं प्रस्तुति।
- ★ कर्नाटक-आंध्रप्रदेश-तेलंगाना अंचल के आंचलिक कार्यालय की बेंगलुरु में स्थापना के लिए केन्द्रीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों की स्वीकृति।

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261